



RNI-MAHBIL/2010/33592

# जैन तीर्थवंदना



वर्ष : 11  
VOLUME : 11

अंक : 9  
ISSUE : 9

मुम्बई, दिसम्बर 2021  
MUMBAI, DECEMBER 2021

पृष्ठ : 36  
PAGES : 36

मूल्य : 25  
PRICE : 25

हिन्दी  
English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2548



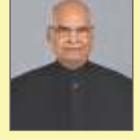
मूलनायक श्री १००८ संकटहर पार्श्वनाथ भगवान श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, जटवाड़ा, महाराष्ट्र

## परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट



दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारूप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।



### मंगल आशीर्वाद



प. पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है। आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रूपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।



कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारूप

- भावी योजनाएँ—** 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संग्रहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. न्यायवर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

**साहू अखिलेश जैन** मुख्य संरक्षक **राजकुमार जैन** अध्यक्ष **सतीश चन्द जैन SCJ** अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था **नरेश जैन** (कामधेनु), दिल्ली अध्यक्ष-अकाउंट उपसमिति **अनिल जैन** कार्याध्यक्ष **मुकेश जैन** कोषाध्यक्ष **राकेश जैन** निर्माण समिति **राजेन्द्र जैन** मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे. एन. यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

### भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

पुनीत जैन (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)



# ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,

Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in

Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया

TMT Grade Fe 415,500,550



## दिगम्बरों का कीर्ति-ध्वज है श्रवणबेलगोला

सधर्मी भाई-बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

एक जमाना था जब दिगम्बर जैन समाज अपने अधिकारों के प्रति कुछ गाफिल-सा हो गया था। उसने अपने तीर्थों पर रचे जा रहे षडयंत्रों को पहचानने में कुछ देर कर दी और दूसरों के सौजन्य पर कुछ ज्यादा ही भरोसा कर लिया। यही तो कारण रहा कि दिगम्बरों के अनेक तीर्थों पर क्रमशः अतिक्रमण किए गए, झगड़े डाले गए और उनकी उपासना – आराधना में अनेक प्रकार के व्यवधान उत्पन्न किए गए। अपनी सज्जनता और सीधेपन से बहुत कुछ खोया है इस समाज ने। पर अब स्थिति बदल गई है। अपने ही अनुभवों से शिक्षा लेकर, और थोड़ा-बहुत खोकर, तीर्थ रक्षा के बारे में यह समाज जाग गया है।

हमारे तीर्थ हमारी आन-बान-शान हैं, हमारी पहचान हैं। भारत में अनेकों स्थानों पर हमारे प्राचीन दिगम्बर जैन तीर्थ स्थापित हैं जो अपनी एक अलग पहचान लिए हुए हैं जिनमें से दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य के हासन जिले में स्थित एक तीर्थ श्रवणबेलगोला (गोम्मटेश्वर) है, जो भारत के सात अजूबों में भी शामिल है। श्रवणबेलगोला में विंध्यगिरि और चंद्रगिरि पर्वत के मध्य 57 फीट उत्तुंग भगवान बाहुबली की दिगम्बर मुद्रा में सन 980 ई. की प्राचीन अद्वितीय प्रतिमा विराजमान है। श्रवणबेलगोला में प्रतिदिन देश एवं विदेश से यात्रीगण दर्शनार्थ पधारते हैं। यह तीर्थ जैनों के साथ-साथ अजैनों के लिए भी आस्था का विशेष स्थल है।

विदित करा दें कि, श्री श्रवणबेलगोला (गोम्मटेश्वर) तीर्थ का कार्य संचालन गत सन 1970 के पूर्व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा किया जाता था। सन 1970 में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तात्कालिक अध्यक्ष श्री साहू शान्तिप्रसाद जी ने अन्य तीर्थों की जिम्मेदारी एवं उनके संरक्षण संवर्धन को ध्यान में रखते हुए श्रवणबेलगोला तीर्थ का कार्यभार एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी गठित कर सौंप दिया साथ ही यह प्रस्ताव पारित किया कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष श्री श्रवणबेलगोला का उपाध्यक्ष होगा तथा 12 वर्ष के अन्तराल में होने वाले भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक में भी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष महामस्तकाभिषेक महोत्सव का गौरवाध्यक्ष होगा।

जैसे श्रवणबेलगोला का नाम जैन मठ से जुड़ता है वैसे ही जैन मठ से भट्टारक श्री चारुकीर्ति महास्वामी जी का नाम जुड़ा है। पूर्व काल में ऐसे महर्षियों की कमी नहीं थी जो व्यक्ति को देखकर ही ज्ञात कर लेते थे कि यह भविष्य में क्या बनेगा और इसकी अभिरुचि किस किस्म की है। ऐसे ही एक महापुरुष थे जिन्हें ज्योतिष शास्त्र का गहरा अध्ययन था। वे कुंडली को देखकर उसके सारे भविष्य को हस्तामलक देख लेते थे। हमारे पूज्य भट्टारक स्वामी जी की कुंडली भी ऐसे ही महापुरुष की दृष्टि से गुजरी और उन्हें अपना

उत्तराधिकारी चुनने में देर नहीं लगी।

सन 1970 में 19 अप्रैल भगवान महावीर जयंती के पावन दिवस पर श्री रत्नवर्मा जैन जगत के इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण श्रीमठ के पट्टाचार्य पद पर आसीन हुए। उसी समय श्री दिगम्बर जैन मुजराई इंस्टीट्यूशन मैनेजिंग कमेटी (एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी) के पदेन अध्यक्ष बन गये। उसी दिन से स्वामी जी ने अपने आपको जैन संस्कृति की सेवा के लिए और श्रवणबेलगोला के विकास के लिए समर्पित कर दिया। यह आपकी ही दूरदर्शिता और अथक प्रयत्नों का फल है कि आज श्रवणबेलगोला अपनी विकास यात्रा पर पूरी तीव्रता के साथ गतिमान है।

यह मेरा सौभाग्य है श्री परमपूज्य जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी जी के अवगाहन पर मुझे भगवान बाहुबली की प्रतिमा का दर्शन एवं स्वामी जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। श्रवणबेलगोला मठ की परम्परा रही है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष का श्री श्रवणबेलगोला में सम्मान किया जाता है और यह परम्परा आज भी बरकरार है इस अंक के आगामी पृष्ठों पर आपको उसकी झांकी देखने को मिलेगी, मैं स्वयं की ओर से एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से आपको धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

जबसे आप गुरु आज्ञा से मठ के उत्तराधिकारी चुने गए तबसे आपके नेतृत्व में मठ के पास 20 से अधिक शिक्षण संस्थाएं, अस्पताल एवं समाजिक संस्थाएं हैं तथा 40 से अधिक मंदिरों का संचालन हो रहा है। 10 शिष्य भट्टारक बनकर अलग-अलग मठों का संचालन कर रहे हैं 20वीं सदी में भट्टारक गदियों के जीर्णोद्धार का श्रेय आपको ही जाता है। आपके मार्गदर्शन में भगवान बाहुबली के चार महामस्तकाभिषेक विश्व स्तर पर संपन्न हो चुके हैं, जिन्हें पूरी दुनिया के लाखों लोगों ने देखा है।

मेरी प्रार्थना है कि हम सभी को आपका सतत मार्गदर्शन ऐसे ही प्राप्त होता रहे, मैं अपनी एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से परम पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।



शिखरचन्द्र पहाड़िया  
राष्ट्रीय अध्यक्ष



# जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं  
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

## मुखपत्र

वर्ष 11 अंक 9

दिसम्बर 2021

श्री शिखरचन्द पहाड़िया

अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)

उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी

उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा

उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल

उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला

उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)

महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)

कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)

मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले

मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)

मंत्री

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर

सम्पादक

उमानाथ दुबे

सम्पादकीय सलाहाकार

डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली

श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल

श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई

श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली

श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर

प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद



वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज जीवन-सुरभि 7

आचार्य विमलसागर जी महाराज की समाधिस्थली श्री सम्पेदशिखर जी 9

सदी के महायोगी आचार्य श्री विद्यासागर साधना के हिमालय हैं 11

Peace and prosperity the Jain muni's way 13

JAIN CENTRES IN MADURAI DISTRICT 14

आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज : युग के महान आचार्य 18

एक दिन के मुनाफे से निर्मित अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी (गढ़ाकोटा), सागर 21

भूगर्भ से प्राप्त जिन बिम्ब विधि - विधान पूर्वक कारीटोरन में स्थापित 24

श्रावक रत्न अलंकरण" से तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए अध्यक्ष .... सम्मानित 25

"राष्ट्रपति भवन में सर्वोच्च जैन साध्वी का मंगल उद्बोधन" 30

हमारे नए सदस्य 33

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थो के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

- कोई भी फर्म, पेढी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
- जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
- सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400004  
फोन : 022-23878293 फैक्स : 022-2385 9370  
website : www.firthkshetracommittee.com, e-mail : firthvandana4@gmail.com, Whatsapp No. : 7718859108

सूच्य	
वार्षिक	: 300 रुपये
त्रिवार्षिक	: 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	: 2500 रुपये



## विनम्र अनुरोध



भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापना काल से ही दिगम्बरों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रही है और एक लम्बे समय से संघर्षरत भी है। हमारा अहिंसक संघर्ष अब निर्णायक स्थिति में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख पहुँच चुका है और अब लगातार केसेस चल रहे हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी ओर से सुप्रीम कोर्ट के अच्छे से अच्छे अधिवक्ताओं के माध्यम से अपना पक्ष सशक्तता के साथ प्रस्तुत कर रही है इसके लिए भारतवर्ष के वरिष्ठ अधिवक्ताओं की सेवाएं ली जा रही हैं।

तीर्थराज श्री सम्मेशिखरजी हम सबका है। और हमारी पहचान का एक प्रखर नक्षत्र भी है। वर्तमान में आये इस संकट का हमें मिलजुलकर सामना करना है, और विजय श्री को प्राप्त करना है। इस संवेदनशील समस्या का समाधान आपके सहयोग से ही संभव है कहीं ऐसा न हो कि हमारी तनिक सी भूल के लिए आगे आने वाली पीढ़ी हमें माफ़ न करें।

अतएव हमारा आपसे विनयपूर्वक अनुरोध है कि अपनी पहचान की रक्षा के लिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग में मुक्तहस्त से दान देकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रयत्नों को मजबूत कीजिए।

हमारा विश्वास है कि आपका वात्सल्य और विश्वास हम पर बना रहेगा एवं आपका आर्थिक सहयोग तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा चलाये जा रहे इस कार्य संघर्ष को बल प्रदान करेगा। शिखरजी के प्रकरण में आपके उदात्त सहयोग की नितांत आवश्यकता है। अतः

कृपया दान राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नाम से

बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी. रोड शाखा, ब्रांच मुंबई-400004

खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE: BARB0VPROAD

में जमा कराकर उसकी मुंबई कार्यालय (टेलीफोन 022-23878293) को सूचना देने की कृपा करें।

संतोष जैन पेंढारी

महामंत्री



## अतिक्रमण : दुःख एवं संघर्ष का कारण

नगरों में स्वयं की भूमि के अतिरिक्त शासकीय/सार्वजनिक उपयोग की भूमि का अतिक्रमण कर मकान/दुकान बनाना अन्ततोगत्वा संघर्ष, विध्वंस या दुःख का कारण बनता है।

ग्रामों में पड़ोसी के खेत की भूमि को अपने खेत में मिलाना संघर्ष का कारण बनता है।

सामाजिक संस्थाओं में स्वयं के अधिकार क्षेत्र से बाहर दूसरे पदाधिकारी के अधिकारों में हस्तक्षेप करना द्वन्द का कारण बनता है।

राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर की संस्थाओं के द्वारा अपनी परम्पराओं या उद्देश्यों को विस्मृत कर अन्य संस्थाओं के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप करने से ही सामाजिक प्रतिद्वन्दिता एवं मनोमालिन्य बढ़ रहा है। आज समाज में इतने अधिक कार्य हैं कि यदि सभी संस्थायें एक-एक मुख्य कार्य को हस्तगत कर ले तो भी कार्य पूर्ण नहीं होंगे किन्तु वर्तमान में प्रवृत्ति यह हो गई है कि संस्थायें दूसरे के कार्य को देखकर उसमें प्राप्त होने वाले यश से ईर्ष्या कर उसे ही करने लगती हैं एवं अपना कार्य छोड़ देती हैं जिससे अनावश्यक प्रतिद्वन्दिता उत्पन्न होती है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना ही तीर्थों के संरक्षण एवं विकास हेतु की गई है एवं यह संस्था हमारे परम पावन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास हेतु सतत सचेष्ट है। हम तीर्थों के मूल स्वरूप एवं उसकी परम्पराओं की रक्षा के अपने संकल्प को पुनः स्मरण कर उसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त करते हैं। सम्मदशिखर जी जैसी परम पावन निर्वाण भूमि पर अपने अधिकार एवं मूल स्वरूप की रक्षा हेतु कमेटी माननीय सर्वोच्च न्यायालय में अपने पक्ष को सक्षमता से प्रस्तुत कर रही है।

अ. भा. दि. जैन महासभा, दि. जैन महासमिति, दि. जैन परिषद एवं दक्षिण भारत जैन सभा जैसी अखिल भारतीय स्तर की संस्थायें भी अपनी प्राथमिकताओं को भुलाकर प्रतिस्पर्धी संस्थाओं की नकल करने लग गईं, फलतः विसंगति पैदा हो गई। महासमिति का जन्म 2500वें निर्वाणोत्सव के बाद राष्ट्रीय स्तर की दि. जैन संस्थाओं (महासभा, परिषद, दक्षिण भारत जैन सभा) में समन्वय करने हेतु हुआ था किन्तु समन्वय तो दूर वह स्वयं 2 भागों में बट गईं फलतः समन्वय समिति-दि. जैन संस्थायें नाम की नई संस्था बनानी पड़ी। महासभा, परिषद आदि की स्थिति पर लिखने से क्या फायदा?

आज कुछ करने की ललक में राष्ट्रीय स्तर की संस्थायें अपना कर्तव्य भूल कर स्थानीय स्तर की संस्थाओं जैसे काम करने लगी हैं। जैसे-मंडल विधान, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं साधु संघों के वर्षायोग। मंडल विधान एवं चातुर्मास कराना जहाँ स्थानीय समाजों का काम है तथा सम्पूर्ण देश के जैन साधुओं की गणना, शासन स्तर पर उनके आहार-विहार की निर्बाध चर्चा हेतु नियम बनवाना, पशुवध रोकने हेतु नियम बनवाना, बूचड़खानों का प्रसार रुकवाना, राष्ट्रीय स्तर की जैन जनगणना, मन्दिरों,

पुस्तकालयों, ट्रस्टों एवं समाज के प्रोफेशनल व्यक्तियों की सम्पूर्ण जानकारी एकत्र करना, दि. जैन संस्कृति की प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता सुनिश्चित करने हेतु शोधकार्य, प्राचीन शास्त्रों का संकलन, संरक्षण, अनुवाद, शोध ग्रंथों एवं शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन आदि राष्ट्रीय संस्थाओं के कार्य हैं। किन्तु वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं ने भी इन कार्यों से विमुख होकर संतों के वर्षायोग, स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों, रोग निदान शिविरों एवं यंत्र-मंत्र बेचने के काम को हस्तगत कर लिया है फिर शोध-अनुसंधानों के काम कौन करेगा। एक पुस्तकालय के विकास में न्यूनतम 10 वर्ष एवं राष्ट्रीय पहचान बनाने में 25 वर्ष लगते हैं। एक शोध पत्रिका को राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करने में 20/25 वर्ष लगते हैं। ये काम रातों-रात नहीं हो सकते। राष्ट्रीय जैन जनगणना जैसे कार्य विपुल मानवीय एवं आर्थिक संसाधनों की अपेक्षा रखते हैं। जबकि पाठशाला चलाना, शिविर लगाने में केवल 2-4 अनुभवी व्यक्ति ही चाहिए। यह भी जरूरी है किन्तु ये स्थानीय संस्थाओं के काम हैं, इसमें व्यापक नेटवर्क नहीं चाहिए। तीर्थकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ ने 1998 में साधुओं की सूची बनाने के काम को महिला संगठन के सहयोग से शुरु किया था बाद में यह काम संस्कार सागर पत्रिका ने ले लिया। पत्र-पत्रिकाओं एवं विद्वानों की सूची बनाने का काम आज भी विद्वत् महासंघ ही कर रहा है किन्तु जैन समाज की जनगणना, मन्दिरों की सूची, हमारी अमूल्य पांडुलिपियों का संरक्षण, सूचीकरण, प्रकाशन, दुर्लभ ग्रंथों की रक्षा, अनुवाद प्रकाशन कौन करेगा? पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रंथों को लाखों/करोड़ों खर्च करके भी प्राप्त करना संभव नहीं है। जो राष्ट्रीय स्तर की संस्थायें सक्षम हैं, जिनके पास प्रशिक्षित मानव शक्ति है। विश्वविद्यालयों में जैन धर्म-दर्शन के अध्ययन/अध्यापन का कार्य, पीठों की स्थापना, गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन सभी विपुल आर्थिक एवं मानवीय संसाधनों की अपेक्षा रखते हैं। विगत 25-30 वर्षों से जो संस्थायें अच्छा काम कर रही थी वे भी अब इनसे विमुख होती जा रही हैं क्योंकि उन्हें अब जल्दी प्रचार की आकांक्षा होने लगी है। वे चाहते हैं कि वे जन-जन के कण्ठहार बने। बड़े काम से यश देर से किन्तु स्थायी मिलता है किन्तु विचारणीय है कि अब समाज का भविष्य क्या होगा? आज दिगम्बरत्व पर चतुर्दिक आघात हो रहे हैं तब हमारी प्राचीनता की रक्षा हेतु तथ्य कहा से आयेंगे? जरा विचारें!

हम सभी को अपने कार्यक्षेत्र के अतिक्रमण से बचना होगा तभी दिगम्बरत्व की रक्षा हो सकेगी।

डॉ. अनुपम जैन, ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,  
इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822



## वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज जीवन-सुरभि

-पं.छोटेला जैन, एडवोकेट

**जन्म-** आसोज वदी सप्तमी, वि.सं. 1973, सन् 1916 ई.

**जन्म स्थान-** कोसमा (जिला-एटा, उत्तरप्रदेश)

**जन्म का नाम-** नेमीचन्द जैन

**माता-पिता का नाम-** श्रीमती कटोरी बाई एवं श्री बिहारी लाल जैन

**शिक्षा एवं संस्था-**शास्त्री, श्री गोपाल दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय, मुरैना (म.प्र.)

**यज्ञोपवीत संस्कार-** आचार्य श्री शांतिसागर जी से फीरोजाबाद में।

**शुद्धजल ग्रहण का व्रत-** आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर जी से।

**दो एवं सात प्रतिमा व्रत-** आचार्य वीरसागर जी से।

**क्षुल्लक दीक्षा-** आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. 2007 सन् 1950 बड़वानी में समाधि सम्राट् आचार्य महावीरकीर्ति जी द्वारा नामकरण-क्षुल्लक वृषभसागर जी।

**ऐलक दीक्षा-** माघ शुक्ल द्वादशी, वि.सं. 2007 सन् 1951 धरमपुरी (इन्दौर) म.प्र., तीर्थ भक्त शिरोमणि प.पूज्य आ. महावीरकीर्ति द्वारा नामकरण-ऐलक सुधर्मसागर।

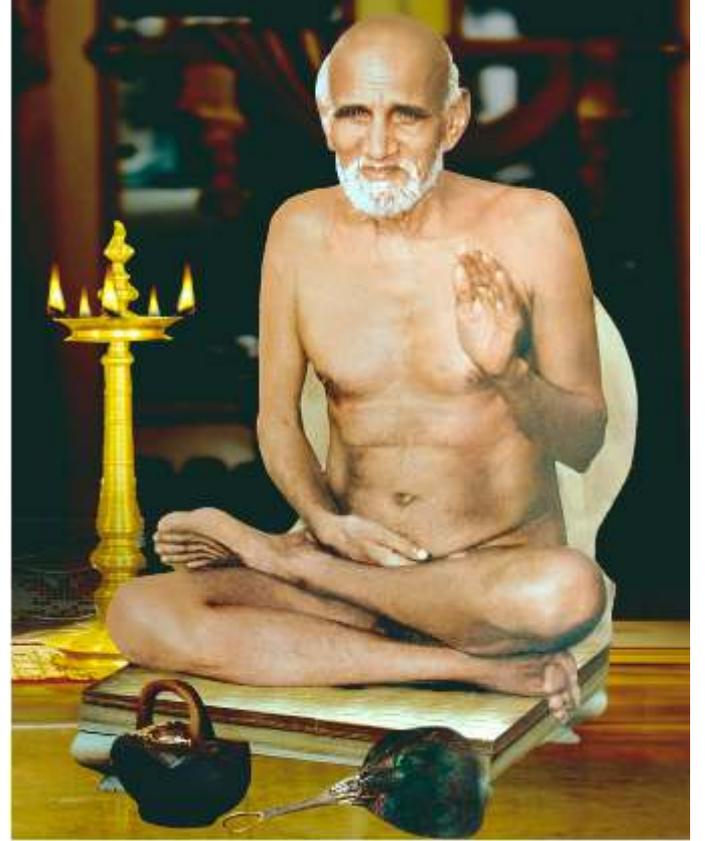
**मुनि दीक्षा-** फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी वि.सं. 2008 सन् 1952 में सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी में अष्टादशभाषी परम पूज्य आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी द्वारा। **नामकरण-** मुनिश्री 108 विमलसागर जी महाराज

**आचार्य पद-** दीक्षागुरु आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी की आज्ञानुसार चतुर्विध संघ द्वारा मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया, सन् 1960, दिन, शनिवार, दिनांक 5.11.1960 को आचार्य पद प्रदान किया गया।

**विद्यादान-** शास्त्री परीक्षा पास करने के बाद वह राजमल, सकरौली-समाज के जैन मंदिरों में ही बच्चों को शिक्षा निःशुल्क देने लगे थे। मात्र समाज में भोजन ही करते थे। इसके कुछ दिन बाद उनके पिता ने अपने कपड़े के व्यापार में लगा दिया। व्यापार में गाँव-गाँव चलकर कपड़े बेचने लगे। उनको सुबह चार बजे व्यापार को जाना होता था, तो सुबह 2.30 बजे उठकर जिनदर्शन करके ही व्यापार को जाते थे।

**कुशल वैद्य भी थे-**संत ऐसा; जो अपनी पूर्वावस्था में कुशल वैद्य रहा हो, प्रतिष्ठाचार्य रहा हो अति दुर्लभ है। आचार्य देव ऐसे दुर्लभ संत थे। आपके द्वार पर अनेक मरीज आते थे और हँसते हुए जाते थे। एक दिवस की बात है कि वैद्य नेमीचन्द जी (आचार्य श्री) शुद्ध वस्त्रादि पहनकर अपना भोजन बना रहे थे। एक बुढ़िया बच्चे के लिए बुखार की दवा लेने आई। उन्होंने णमोकार मंत्र पढ़कर चूल्हे की राख दे दी और कहा गर्म पानी के साथ पिला देना। ऐसा करने से ही बच्चा ठीक हो गया। यह थी आचार्य श्री (वैद्य नेमीचन्द) की णमोकार मंत्र पर श्रद्धा एवं विश्वास।

**जब वैराग्य फूट पड़ा-**वे अध्यापन भी कराते थे। उनमें वात्सल्य,



सत्यता, नैतिकता, सरलता, व्यवहार कुशलता, सदाचार आदि कूटकूट कर भरे थे। परन्तु एक दिन नेमीचन्द जैन पिताजी के पास पहुँचे तो जमीन साफ किए बिना बैठ गये। पिताजी अहिंसा के पुजारी थे। तुरंत उनके मुँह से शब्द फूट पड़े-“कुत्ते भी जमीन साफ करके बैठते हैं।” यद्यपि पिता जी के शब्द तत्काल सम्बोधनार्थ थे परन्तु सच्चा सम्बोधन भावी जीवन को मिल गया। पिताजी के शब्दों ने गहरी चोट पहुँचाई, संसार से मुख मुड़ गया। उनके द्वारा जीवों की हिंसा हो रही है अब पूर्ण अहिंसा धर्म की खोज में जीवन मोड़ना है अतः वैराग्य का रस छलछला उठा। पिताजी के सम्बोधन ने संसार से छुड़ा दिया। इसी धुन में सम्मेशिखर जी की महत्ता पर एक पुस्तक पढ़ी और उसमें श्री नेमीचन्द जी को निम्न पंक्तियाँ पढ़ने की मिली-

**एक बार वंदे जो कोई, ताहि नरक पशु गति नहीं होई।**

वह इसी धुन में ब्रेक रहित साइकिल से शिखर जी की वंदना को चल पड़े। रास्ते में साइकिल खराब हो गई अर्थात् पंचर हो गया। कुछ दूर चलने पर उन्हें साइकिल ठीक करने वाला मिला और पंचर जोड़ गया। कुछ दूर चलने के बाद उन्हें याद आया कि उनका पंप वहीं रह गया है। पीछे लौटे तो उसी स्थान पर पंप पड़ा है किन्तु वहाँ कोई दुकानदार नहीं



## आचार्य विमलसागर जी की पुण्य तिथि पर विशेष आलेख

है। यह थी उनकी णमोकार मंत्र एवं सम्मोदशिखर के प्रति प्रगाढ़ आस्था एवं श्रद्धा। कुछ दिन बाद यात्रा करके वापिस लौट आए, तब मालूम पड़ा कि श्री नेमीचन्द्र जी शिखर जी की वंदना करके आ गए हैं।

आचार्य विमलसागर जी को सोनागिर जी (म.प्र.) एवं श्री सम्मोदशिखर जी से अगाध श्रद्धा एवं विशेष भक्ति थी। सोनागिर एवं सम्मोदशिखर दोनों ही सिद्धक्षेत्र हैं। परन्तु सर्वप्रथम नाम कैलाश पर्वत का आता है। कैलाश पर्वत से श्री 1008 भगवान् आदिनाथ ने मोक्ष प्राप्त किया है। दूसरा स्थान सम्मोदशिखर का है, जहाँ से 20 तीर्थकरों ने मोक्ष प्राप्त किया है। तीसरा सोनागिर सिद्धक्षेत्र है, जहाँ भगवान् चंद्रप्रभ के काल में साढ़े पाँच करोड़ मुनि तथा नंगानंग कुमार सहित अनेक जीवों ने मोक्ष प्राप्त किया है।

एक कवि ने इस क्षेत्र की महत्ता इस प्रकार वर्णित की है-

**सोनागिर सोने का गिरि है, यही बात है सच्ची।**

**जो सोनागिर दर्शन पाते, उनकी किस्मत अच्छी।।**

**जिनकी चाहों में विशुद्धता और भावों में भक्ती है।**

**सोनागिर उस कर की माटी, सोना कर सकती है।**

वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागरजी ने इसी सोनागिर क्षेत्र पर मुनि दीक्षा आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी से प्राप्त की थी। मुनि दीक्षा लेकर आपने अपने को पवित्र किया और अपने लक्ष्य को प्रारंभ किया।

आचार्य श्री विमलसागर जी को जन्म से पूर्व गर्भावस्था से ही सोनागिर सिद्धक्षेत्र से लगाव हो गया था। जब शिशु नेमीचन्द्र (आचार्यश्री) गर्भ में आए थे तो उनकी माताजी को सपना आया था कि तुम्हें सोनागिर जी की वंदना करना चाहिए। स्वप्न की बात उन्होंने अपने पति श्री बिहारीलाल जी को बताई थी और माता-पिता दोनों ने सोनागिर की वंदना की। वंदना से लौटने पर माता-पिता भट्टारक जी से आशीर्वाद लेने पहुँचे और आशीर्वाद प्राप्त किया। भट्टारक जी ने कहा था कि इस गर्भस्थ बालक का प्रथम मुंडन सोनागिर जी में ही कराना। माता-पिता ने बालक का प्रथम मुंडन सोनागिर में ही कराया। गर्भावस्था और प्रथम मुंडन के संस्कार ऐसे मिले कि बालक नेमीचन्द्र बाल्यकाल से ही देवदर्शन एवं अभिषेक करने के बाद ही भोजन करते थे। उनकी आदतों में परोपकार, सहृदयता, सभी की सहायता करना एक नियम बन गया था। यह सब कुछ उन्होंने गर्भ में ही सीख लिया था कि मुनि नग्न रहते हैं और किस प्रकार अपनी दिनचर्या करते हैं।

आचार्य विमलसागर जी के तीन संस्कार सोनागिर जी में हुए थे-

1. गर्भावस्था में सोनागिर जी वंदना।
2. प्रथम मुंडन संस्कार।
3. सन् 1952 में मुनि दीक्षा।

उन्हें इसी वजह से सोनागिर से अधिक लगाव था। उन्होंने सबसे अधिक 6 चातुर्मास सोनागिर जी में किए थे। दूसरा लगाव था सम्मोदशिखर से; जहाँ उन्होंने 5 चातुर्मास किए थे।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज ने जन जन को धर्म का मर्म सिखाया। धर्म के रहस्य- अहिंसा, प्रेम, वात्सल्य व

करुणा से भव्य प्राणियों का उत्थान किया। उन्होंने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण सम्पूर्ण भारतवर्ष की चार बार पद-यात्रा की और शताधिक भव्य जीवों को अपने पावन कर कमलों से संस्कारित कर मोक्षमार्ग का पथिक बनाया जो कि वर्तमान में आचार्य, उपाध्याय, मुनि एवं आर्यिका जैसे पावन पदों पर प्रतिष्ठित हैं तथा धर्म के प्रचार में अविस्मरणीय योगदान कर रहे हैं।

आचार्यश्री के जीवन में सहजता, सरलता, स्वभाव से शोभायमान होती थी। एक बार जिसने भी दर्शन कर लिए, वह चुम्बक की तरह खिंचा चला आता था। उन्होंने स्व एवं परउपकार तो किया ही; साथ ही संसार में भटकते प्राणियों को कुछ जाप या णमोकार मंत्र बताकर सही दिशा पर लगाया। एक श्रेष्ठ गुरु एवं आचार्य के समस्त लक्षण उनमें विद्यमान थे। जिस प्रकार मोमबत्ती स्वयं जलती है और दूसरों को प्रकाशवान करती है उसी प्रकार आचार्यश्री अपने शिष्यों को ज्ञान, ध्यान, तप एवं साधना के द्वारा प्रकाशवान करते थे। वे अपने शिष्यों को अपने से अधिक दृढ़ बनाने में दृढ़चित्त रहते थे। गुरुदेव के साधना काल में ध्यान व स्वाध्याय की प्रमुखता रही। उनके मन में सभी के प्रति करुणा का स्रोत बहता था कि कैसे इसका कष्ट दूर करूँ? उन्हें ऐसा लगता था कि प्रत्येक प्राणी सुखी रहे, कोई भी दुःखी या पीड़ित न हो, सभी धर्म में लगे रहें। आपने सभी छोटे या बड़े, जैन या जैनैतर सभी पर ऐसी छाप छोड़ी कि कोई आपको भुला नहीं सकता है।

सोनागिर जी के बारे में कहा जाता है कि-

**मुनि तपस्या करें यहाँ पर, सुरपुर में जाने को ।**

**स्वर्गों में सुर करें तपस्या, सोनागिर आने को ॥**

**स्वर्णाचल के विमल राष्ट्रपति, चन्द्रप्रभु जिनदेव महान ।**

**कल्पवृक्ष सम भव्य जनों को, मन चाहा देते वरदान ॥**

आचार्य विमलसागर जी ने सर्वप्रथम चातुर्मास सोनागिर जी में लगातार दो साल तक 1978 एवं 1979 में किया था। चन्द्रप्रभ मंदिर नं. 57 पर देखा कि नंग एवं अनंग कुमार के चरण तो हैं, परन्तु मूर्ति के बिना मंदिर प्रांगण कम शोभायमान लगता है। आचार्य श्री ने 1978 में नंगकुमार की मूर्ति तथा अनंगकुमार की मूर्ति 1979 में प्रतिष्ठित करवायी; जो भगवान् बाहुबलि जी के दोनों ओर शोभायमान हैं। इन दोनों बिम्बों के पंचकल्याणक 1979 में कराकर प्रतिष्ठित किया गया।

आचार्यश्री के द्वारा 4 चातुर्मास सोनागिर जी में लगातार 1988, 1989, 1990 एवं 1991 में हुए थे। उन चार वर्षों में सोनागिर जी में कुन्दकुन्दाचार्य की मूर्ति, श्रुतस्कन्ध एवं वर्तमान चौबीसी पंचकल्याणक कराके प्रतिष्ठापित किए गए। इन चार वर्षों में बीसपंथी कोठी, भट्टारक जी, पद्मावती पुरवाल मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया एवं स्याद्वाद नगर की स्थापना हुई, वैसे इसका प्रारंभ 1979 से ही हो गया था। सोनागिर से आचार्य श्री का सबसे अधिक लगाव था। आचार्यश्री के गुणों का वर्णन कोई नहीं कर पाया। यदि कोई ऐसा करता है, तो सूरज को दिया दिखाने के समान होगा। आचार्यश्री के चरणों में नमन, वंदन एवं अभिवंदन।





## आचार्य विमलसागर जी महाराज की समाधिस्थली श्री सम्मेदशिखर जी

-डॉ. सुमत जैन, जयपुर

समाधिस्थली से तात्पर्य सामान्यतः उस स्थान से ग्रहण किया जाता है, जहाँ किसी मुनि अथवा पुण्यात्मा के मृत शरीर को गाढ़कर अथवा जलाकर स्मारक बनाये जाते हैं। इसी अर्थ का प्रतिपादन प्रायः सभी शब्दकोश करते हैं। किन्तु, आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की समाधिस्थली पर यह अर्थ लागू नहीं होता है। यहाँ उनकी समाधिस्थली का अर्थ है- स्थल विशेष की ऐसी व्यवस्था जिससे उनकी याद स्थायी बनी रहे तथा आगन्तुक उनके पुण्यकारी कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करते रहें।

परमपूज्य आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज का समाधिस्थल सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर पर स्थित है। इसे शाश्वत तीर्थ भी कहा जाता है। इस तीर्थक्षेत्र के जैसा अन्य कोई क्षेत्र संसार में नहीं है, क्योंकि इस तीर्थराज की मान्यता अनादिकाल से रही है। यह तीर्थक्षेत्र चौबीस तीर्थकर में से बीस तीर्थकरों की निर्वाणस्थली तथा असंख्यात मुनिराजों की मोक्षस्थली भी है। इसलिए इस क्षेत्र का कण-कण पूजनीय व वंदनीय है। ऐसे क्षेत्र में स्थित आचार्यश्री की समाधिस्थली का भी विशेष महत्त्व है।

तीर्थराज सम्मेदशिखर पर विगत 500 वर्षों में आचार्य विमलसागर जी पहले आचार्य थे, जिनका समाधिमरण आचार्यपद पर हुआ था। इस सम्बन्ध में विद्वान् मनीषी कमल जी बाकलीवाल ने अपने लेख 'श्रमणशिखर का जीवन-पथ' में लिखा है कि वह समय आ गया था जिसका इन्तजार साधना के महासपूत चमत्कारी बाबा मन ही मन कर रहे थे, लेकिन श्रावक जगत् इस समय का इन्तजार जीवनपर्यन्त नहीं चाहता था। किन्तु, 29 दिसम्बर, 1994 का दिन श्रमण संस्कृति में आचार्य प्रवर विमलसागर जी महाराज के समाधि दिवस के नाम से अंकित हुआ। यह घटना श्रावक जगत् को आश्चर्य में डाल गयी और साधना के महासपूत आचार्यश्री चमत्कारपूर्ण सम्यक् समाधि में लीन हो जन-जन को आश्चर्य में डालते हुए सारी दुनिया मेरी, मैं किसी का नहीं; कहते हुए चित्त चुराकर चल बसे। प्राणीमात्र का मोह त्यागकर स्वध्यान में लीन हो गये।

पूज्य आचार्यश्री के समाधिमरण के पश्चात् 30 चौबीसी का निर्माण कार्य चल रहा था। 30 चौबीसी का निर्माण कार्य परिपूर्ण होने के बाद उसके मध्य में रिक्त स्थान पर आचार्यश्री के भक्तों ने आचार्यश्री की स्मृतियाँ सदा जीवित रखने हेतु समाधिस्थली का शिलान्यास कर समाधिस्थल निर्मित किया, जो वर्तमान में भी आचार्यश्री की जीवंतता का बोध कराती है।

यह समाधिस्थल तीन कक्षों में निर्मित है। सबसे अन्दर के भाग में आचार्यश्री की भव्य प्रतिमा विराजमान है, दूसरे कक्ष में आचार्यश्री के चरण स्थापित हैं एवं तीसरे कक्ष (दूसरे के बराबर में) में



यात्रियों के प्रेरणार्थ भजन-कीर्तन इत्यादि हेतु स्थान है, जहाँ बैठकर यात्रीगण आचार्यश्री के प्रति गुणगान करते हैं एवं अपने-अपने तरीके से उनका यशोगान व अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित कर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

प्रथम कक्ष में स्थित आचार्यश्री की प्रतिमा उनके व्यक्तित्व का परिचय कराती है। जिससे अवगत होता है कि आज से 100 वर्ष पूर्व भारत देश के उत्तर प्रान्त में एक महान् सपूत 'नेमिचन्द्र' ने जन्म लेकर कोसमां ग्राम (एटा, उ.प्र.) को पवित्र बनाया था। वह सपूत आगे चल कर महान् विद्वान्, वैद्य, प्रतिष्ठाचार्य हुआ फिर दिगम्बरत्व को धारण कर वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

परम पूज्य आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज ने जन-जन को धर्म का मर्म सिखाया। धर्म के रहस्य- अहिंसा, प्रेम, वात्सल्य व करुणा से भव्य प्राणियों का उत्थान किया। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण सभी क्षेत्रों (तीर्थक्षेत्रों) की वन्दना करके नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में भ्रमण करते हुए जैन और जैनेतर को सप्त व्यसन का त्याग कराकर सन्मार्ग में लगाया। पूज्य आचार्यश्री के जीवन में सहजता, सरलता



## आचार्य विमलसागर जी की पुण्य तिथि पर विशेष आलेख

उनके स्वभाव में ही शोभायमान थी। एक बार जिसने दर्शन कर लिया, वह चुम्बक की तरह खिंचा चला आता था व पुनः पुनः दर्शन की अभिलाषा रखता था। उन्होंने स्वोपकार ही नहीं किया, बल्कि परोपकार की भावना से भी दूर नहीं रहे। एक श्रेष्ठ गुरु के समस्त लक्षण उनके रोम-रोम में विद्यमान थे। वे प्राज्ञ थे अर्थात् जिस प्रकार मोमबत्ती स्वयं जलती है व दूसरों को प्रकाशमान करती है, उसी प्रकार आचार्यश्री अपने शिष्यों को ज्ञान, ध्यान, तप साधना के द्वारा प्रकाशमान करते थे तथा स्वयं अपने शिष्यों को अपने से अधिक दृढ़ बनाने में दृढ़चित्त रहते थे।



आपके सान्निध्य को पाकर अनाथ सनाथता का अनुभव करता है। कितने ही सामान्यजन श्रीमन्त बन गये तथा धर्मात्मा यतिपने को प्राप्त हो गये। उन्होंने अपने जीवन को खुशहाल बना लिया। दिगम्बर गुरु योग के शिखर होते हैं। योगी परम पूज्य गुरुदेव के साधना काल में ध्यान व स्वाध्याय की प्रमुखता रही। वे दुःखी, कृपा-पात्रों को महामंत्र का जाप करने का आदेश देते, जिससे उनके पुण्य की अभिवृद्धि हो दुःख दूर हो जाते थे। वे किसी को भी दुःखी नहीं देख सकते थे। उनके मन में करुणा का स्रोत प्रवाहित था। उन्हें ऐसा लगता था कि प्रत्येक प्राणी सुखी रहें, कोई भी दुःखी या पीड़ित न हो तथा सभी धर्म में लगे रहें। वे वैयावृत्ति में भी अग्रसर रहते थे। अपने से छोटे या अन्य का विकल्प न करते हुए भी वैयावृत्ति करते थे। इस प्रकार यह प्रतिमा हमें इन सभी तथ्यों का स्मरण कराती है और हमें धर्माभिमुख होने के लिए जागृत करती है।

द्वितीय कक्ष में स्थित चरणचिह्न से हमें आचार्यश्री के गुणों का अवबोध होता है। आचार्यश्री गुणों की खान थे। आप सन्मार्ग दिवाकर, तीर्थोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति, ज्योतिपुंज, करुणा के सागर, जन-जन के उद्धारक थे। उनके चरण-चिह्न हमें उनकी चारित्रिक-विशेषताओं का भी बोध कराते हैं, जिनका सामान्यतः अवलोकन हम इन शब्दों में कर सकते हैं-

1. किन्हीं भी दिगम्बर साधु के आने पर उन्हें लेने जाना व उनके जाने पर छोड़नेजाना। इसे वे अरहंतलिंग का सम्मान मानते थे।
2. सामने वाले की बात को सम्मानपूर्वक सुनना।
3. किसी के आने पर मुस्करा कर बोलना या मुस्करा देना।
4. सिद्धान्त व आगमोक्त चर्या का पालन।

5. गुरु के प्रति विनय रखना, कदापि उनकी अवहेलना न करना।
6. आप में वैद्य, वास्तुविज्ञ, निमित्तज्ञानी, अध्यापक आदि अनेक गुण समाहित थे।

तृतीय कक्ष में सभी भक्त जन बैठकर आचार्यश्री के गुणों का स्तवन, पाठ और भजन कर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं तथा आरती करके अपने आपको भाग्यशाली मानते हैं।

आपकी जीवनचर्या ने आबालवृद्ध सभी पर अमिट छाप छोड़ी है, जिसके कारण कोई आपको विस्मृत कर ही नहीं सकता। आज भी आपके पावन स्मरण मात्र से भव्यात्माओं के विघ्न दूर हो रहे हैं, कार्य पूरे हो रहे हैं।

आपके अतिशयपूर्ण कार्य हुए, जिनसे सारे देश के भव्यजन लाभान्वित हैं। किन्तु आज आपका अभाव हम सभी के अन्तर्मन को झकझोर देता है। आपके समाधिस्थ हो जाने से सारा जैन समाज अनाथ सा हो गया; यह क्षतिपूर्ति होना अत्यधिक कठिन है। क्योंकि आप में वे सभी गुण थे जो एक भव्यात्मा में ही पाये जाते हैं। आपकी प्रतिमा से व्यक्ति इतना प्रभावित होता है कि कुछ समय के लिए बाहरी दुनिया को ही भूल जाता है। ऐसे गुणों के आकर गुरुराज के जीवन-चरित्र को जीवंत रखने हेतु सम्मेदशिखर जी में निर्मित समाधिस्थली का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। समाधिस्थली के चारों तरफ प्रकृति द्वारा विकीर्ण मनोरम दृश्य समाधिस्थलों की भव्यता को और भी मनमोहक बना रहे हैं। इससे यह दृश्य मानव-मन को अपने-आप समाधिस्थ करने में सक्षम प्रतीत होता है।

**जब धर्ममार्ग अविरोद्ध हुआ पथ भूल भटकते थे प्राणी।  
सतगुरु के उपदेश बिना, नहीं जान सके थे जिनवाणी।  
धर दीक्षा मुनि धर्म बताया स्वयं बने निश्चय ध्यानी।  
प्रणमूं श्रीविमल सिन्धुजी को, जिनकी महिमा सबने जानी॥**

अंततः कहना चाहता हूँ कि समाधिस्थ आचार्य विमलसागर जी की विमल वाणी मोती बन जग को दिशा देगी। तीर्थराज पर निर्मित समाधिस्थली हमें हमेशा याद दिलाती रहेगी। इस सम्बन्ध में देश के प्रसिद्ध गीतकार-संगीतकार रवीन्द्र जैन की यह विनयांजलि उल्लेखनीय है-

**यह मत सोचो अब तो गुरुवर हमको नहीं मिलेंगे।  
जब सम्मेदशिखर जाओगे, गुरुवर वहीं मिलेंगे॥**





## आचार्यश्री के 50वें आचार्य पदारोहण पर विशेष : सदी के महायोगीआचार्य श्री विद्यासागर साधना के हिमालय हैं

- डॉ. सुनील संचय, ललितपुर

श्रमण संस्कृति की गौरवशाली परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज अपनी आगमोक्त चर्या और आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा निरंतर आत्मसाधना व प्रभावना में संलग्न हैं। आप श्रमण परंपरा के विलक्षण और तपस्वी संत हैं। आपने समाज और संस्कृति को भी एक नई दिशा दिखाई है।

**आचार्य श्री का जन्म :** आचार्य विद्यासागर जी का जन्म 1946 में शरद पूर्णिमा को कर्नाटक के बेलगांव जिले के सदलगा ग्राम में हुआ था। उनके पिता मल्लप्पा व मां श्रीमती ने उनका नाम विद्याधर रखा था। कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के बाद विद्याधर ने 1967 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया।

**ऐसे बने विद्या के सागर :** कठिन साधना का मार्ग पार करते हुए आचार्यश्री ने महज 22 वर्ष की उम्र में 30 जून 1968 को अजमेर में आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ली। गुरुवर ने उन्हें विद्याधर से मुनि विद्यासागर बनाया। 22 नवंबर 1972 को अजमेर में ही आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने आचार्य की उपाधि देकर उन्हें मुनि विद्यासागर से आचार्य विद्यासागर बना दिया। दौर शुरू हुआ तो आचार्य श्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

**50वें आचार्य पदारोहण दिवस पर डाक विभाग जारी करेगा आवरण :** हम सभी का सौभाग्य है कि हमें आचार्यश्री का 50वां आचार्य पदारोहण दिवस मनाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, इस अवसर पर जहाँ पूरे देश में विशेष आयोजन होंगे वहीं भारतीय डाक विभाग द्वारा अनेक राज्यों के अनेक मंडलों से आचार्यश्री पर बड़ी संख्या में कवर चित्र जारी किए जाएंगे, जो कि ऐतिहासिक होंगे।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना से गौरवान्वित किया है।

**कृतित्व सार्वभौमिक :** आज तक के इतिहास में किसी भी संस्कृत भाषा के

विद्वान ने पांच से ज्यादा शतक संस्कृत भाषा में नहीं लिखे हैं किंतु आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपनी लेखनी से संस्कृत भाषा में छह शतक लिखे हैं। उनका कृतित्व सार्वभौमिक है, ज्ञान, ध्यान, तप के यज्ञ में आपने स्वयं को ऐसा आहूत किया कि अल्पकाल में ही प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी,



अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़ भाषा के मर्मज्ञ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हो गये। नई शिक्षा नीति में भी आपके मार्गदर्शन को शामिल किया गया है।

**जन-जन की आस्था के केंद्र :** आचार्यश्री मात्र जैनों के ही नहीं जन-जन की आस्था के केंद्र हैं। इनकी प्रेरणा से हजारों गौवंश की रक्षार्थ दयोदय गौशालाएं संचालित हो रही हैं, हिंदी भाषा अभियान, इंडिया हटाओ भारत लाओ अभियान, हथकरघा स्वावलंबन रोजगार, स्वदेशी शिक्षा, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी का बेजोड़ साहित्य, हाइकू आदि उनकी श्रेष्ठतम साधना उन्हें संत शिरोमणि कहलाने के लिए काफी है।

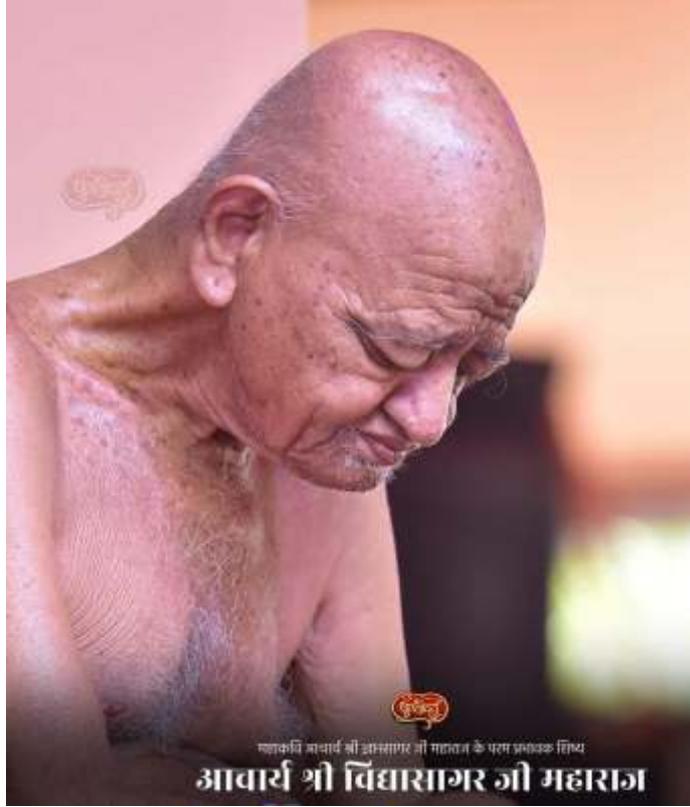
आचार्यश्री की तप साधना के कारण प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति सहित लाखों जैन-जैनेतर श्रद्धालु उनके चरणों में श्रद्धा से शीश झुकाते हैं। आचार्यश्री की प्रेरणा से प्रतिभास्थली के माध्यम से बेटियों को

संस्कारयुक्त शिक्षा देने का उपक्रम स्तुत्य है।

जीवन-मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के कारण उनके व्यक्तित्व में विश्व-बन्धुत्व की, मानवता की सौंधी-सुगन्ध विद्यमान है। आचार्यश्री की महत्त्वपूर्ण कृति 'मूकमाटी' की एक कविता को मध्यप्रदेश सरकार ने कक्षा 9 के पाठ्यक्रम में शामिल किया है।

**व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर है :** आचार्यश्री का व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर है, रत्नत्रय के धारी मोक्षमार्ग के पथिक हैं। वे साधना के हिमालय हैं। आचार्यश्री साधना की एक पाठशाला हैं। वे सत्य की साधना के साथ प्रयोग करते हैं। विभिन्न भाषाओं के वेत्ता आचार्यश्री चलते-फिरते विश्वविद्यालय हैं, इस सदी के महायोगी हैं। वे गंभीरता से तत्त्व का चिंतन करते हैं।

आचार्यश्री ने भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति के रूप में आयुर्वेद के संरक्षण





और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग पर विशेष बल दिया है। उनके आशीर्वाद से जबलपुर मध्यप्रदेश में पूर्णायु आयुर्वेद चिकित्सा और अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना हुई है। इस केन्द्र में अहिंसक शुद्ध और सात्विक विधि से निर्मित औषधियों से बड़े से बड़े रोगों का समूल निदान किया जाता है।

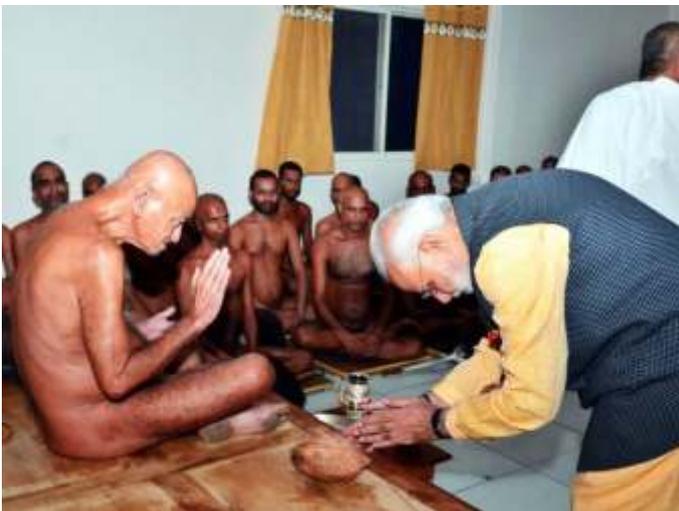
**महान साधक, कठोर साधना :** ठंड, बरसात और गर्मी से विचलित हुए बिना आचार्य श्री ने कठिन तप किया। उनका त्याग और तपोबल आज किसी से छिपा नहीं है। टीवी, मोबाइल, लैपटॉप आदि आधुनिक सुविधा साधु के कमरे में नहीं दिखती। संघ में सभी संत, साधु शिक्षित, संस्कारी, बाल ब्रह्मचारी हैं। चौका कितना आसान मात्र दाल-फुलका, न सब्जी, न फल, न घी। चाहे कितनी ही तेज गर्मी हो या कितनी ही कड़कड़ाती ठंड, संघ के किसी साधु के कमरे में कूलर, एसी, हीटर देखने को नहीं मिलते। न पंखे का उपयोग करते, न ही मच्छर भगाने वाले किसी ऑयल या कायल का उपयोग करते, धन्य है ऐसी साधना। किसी तरह के तंत्र, मंत्र, ताबीज आदि की क्रियाओं से आचार्यश्री का संघ अछूता है।

इसी तपोबल के कारण सारी दुनिया उनके आगे नतमस्तक है। 50 वर्ष से अधिक समय से एक महान साधक की भूमिका में हैं। उनके बताए गए रास्ते पर चलकर हम देश तथा संपूर्ण मानव जाति की भलाई कर सकते हैं। आचार्य श्रेष्ठ प्राणी मात्र का कल्याण करने वाले हैं। आचार्य श्री ने नवयुवकों के लिए दीक्षा देकर उन्हें संयम के पथ पर चलाया है। आज उनके संघ में हजारों श्रावक व श्राविकाएं संयम के पथ पर चल रहे हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज भारतीय संस्कृति के संवाहक हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वदेशी अपनाएं, पर्यावरण-स्वच्छता अभियान, हिंदी अपनाएं, संस्कृति बचाओ जैसे अभियानों को वे निरंतर गति दे रहे हैं।

**आचार्यश्री का संदेश स्वदेशी अपनाएं :** आचार्यश्री का कहना है कि अपने ही देश में निर्मित होने वाले कपड़े को पहनों व विदेशी वस्त्रों का त्याग करो, जिससे पुनः भारत देश भारत बन जाये। हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाने लगे।

**प्रतिभास्थली से बेटी पढ़ाओ अभियान को मिली नई दिशा :** आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का सपना है कि हमारी बेटियाँ पढ़ाई को निरंतर रखें



व पढाई में अग्रणी हों व उन्हें लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी मिले इसी उद्देश्य को लेकर आज देश के पांच स्थानों पर महाराष्ट्र के रामटेक, छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ व मध्यप्रदेश के जबलपुर, इंदौर, उत्तर प्रदेश के ललितपुर में प्रतिभा स्थली संचालित हो रही हैं। जिनमें बालिकाओं को शिक्षा देकर उन्हें संस्कारित कर संस्कार के पुष्प पल्लवित हो रहे हैं। आचार्य श्रेष्ठ का सपना है कि हमारी बेटियाँ पढ़-लिखकर अपना व माता-पिता, समाज का नाम रोशन करें।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना से गौरवान्वित किया है।

**हर चर्या अतिशय-सी दिखती है :** आचार्यश्री को पाकर लगता है न जाने कितने जन्मों का पुण्य आज फलित हो रहा है। आचार्यश्री चलते फिरते तीर्थ हैं। उनके तेज दमकते हुए आभामंडल और मुस्कान को देखकर हजारों लोगों के दुख दूर हो जाते हैं। आचार्यश्री के दर्शन जो भी करता है व धन्य हो जाता है। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती है उसे पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती है। आचार्यश्री की हर चर्या अतिशय-सी दिखती है। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती है उसे पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती है। उनकी मंगल वाणी खिरते समय जो शांति का अमृत बरसता है, चारों ओर एक अजीब-सा सन्नाटा, मात्र आचार्यश्री की वाणी अनुगूंज सुनायी देती है। सचमुच अद्भुत और निराले संत हैं आचार्यश्री।

आचार्यश्री के सपने को साकार करने में हजारों-लाखों युवा लगे हुए हैं, हम सब मिलकर आचार्यश्री के इस 50वें आचार्य पदारोहण महामहोत्सव के अवसर पर अपने गुरुदेव के सपनों को साकार करने में अपनी भूमिका को ईमानदारी से निभायें। किसी कवि की यह पंक्तियाँ आचार्यश्री विराटता को व्यक्त करती हैं-

"कुन्दकुन्द के समयसार का सार हमें जो बता रहे,  
समन्तभद्र का डंका घर-घर, द्वार-द्वार बजा रहे।  
भोले-भाले अनाथ जन के जो हैं पावन धाम,  
ऐसे विद्यासागर गुरुवर को हमारा शत-शत प्रणाम।।"





## Peace and prosperity the Jain muni's way

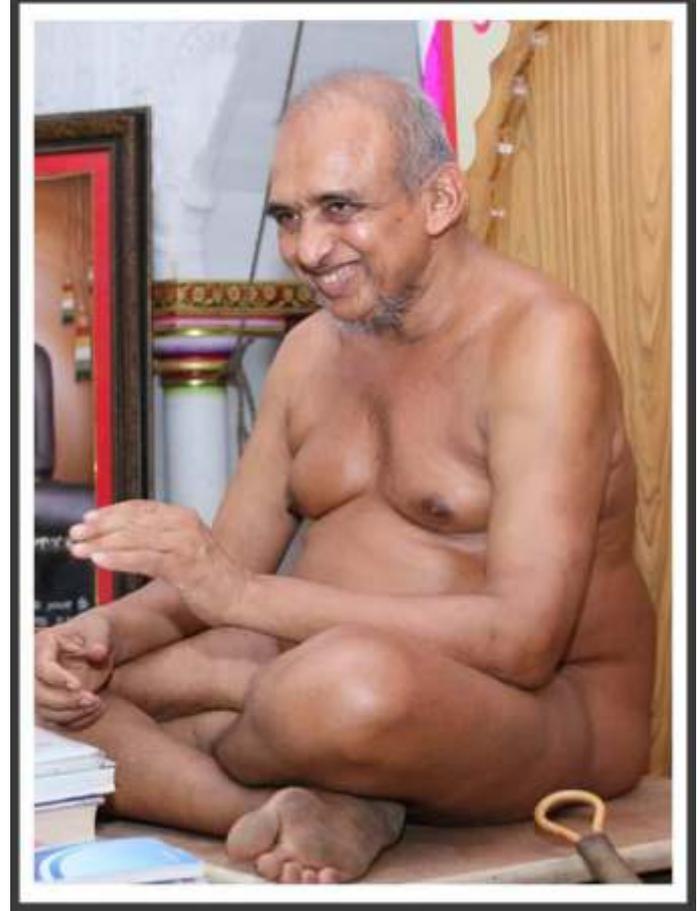
- Swaraj Jain, New Delhi

Digambar Jain muni Acharya Gyansagar was indeed a gyansagar, an ocean of knowledge, in the real sense. A great saint, social reformer, and epitome of penance, Acharya Maharaj spent a large part of his life studying sacred scriptures, spreading the teachings of Mahavir, and raising his voice against the ills in society.

The Jain sage firmly believed that the concept of Anekantavad can resolve all conflicts in the world. Each substance has various attributes contradictory in nature. To have proper understanding one has to look at things in totality, from all angles. Four visually impaired persons will always describe an elephant in four different ways. The person touching its legs would say that the elephant is like a pillar, whereas the one who is feeling its trunk would describe it like a thick rope. The man touching its ears would say it is like a big fan, and the fourth one touching its tail would describe the pachyderm as a thin rope. Everyone is right in his own way.

However, the problem starts when we stick to our point of view and refuse to respect others' perspective. Mahavir was among the first world teachers to declare that the same truth can be viewed differently by diverse people. In Jainism, there are 24 Tirthankaras in every kaal, period. Mahavir never said that only Jains should progress in the world; he gave the same respect to plants and trees as he gave to human beings. He promoted the concept of Anekantavad that teaches us to be tolerant, said Acharya ji.

Contrary to what people think, Jains are not atheists. Removing misconceptions about the Jain belief system, Gurudev would say that the universe, cosmos, according to Jain cosmology, is Anadi Nidhan. It is not created, protected, or destroyed by any superpower called God. It exists since time immemorial and will continue till infinity. It consists of six dravyas, substances, namely jiva, soul; pudgala, matter; dharma, ether; adharma, anti-ether; akasha, space; and kala, time. The jiva journeys through 84 lacs yonis, species, according to its good or bad karmas, and pudgala, karmic particles, remain attached to the jiva till it wanders; dharma helps the jiva and pudgala move from one place to another; adharma helps them stay, remain stationary; akasha provides space; and kala helps substance in Parinaman, continuous change of form. The jiva is the doer of its karma. God doesn't punish or reward it for its deeds. Why would he punish his



own children? The jiva reaps the fruit of its karmas when they fructify. Every soul can attain nirvana, salvation, by freeing itself from the karmic bondage through penance and renunciation.

Progressive in his outlook, Gyansagar ji, was a social reformer who spoke against female foeticide and also opposed widespread evils like gambling and bursting crackers during Deepavali. He believed that to get wealthy, worshipping Lakshmi is not as important as doing good karma. "Why worship Lakshmi? Earn your livelihood honestly, do good karma, and wealth will automatically come to you. Don't kill innocent, small creatures and cause pollution by bursting crackers and fireworks. Celebrate Deepavali differently, distribute sweets and provide monetary help to the poor and needy and be the reason of their happiness. Then Lakshmi will be yours forever," he said.





## JAIN CENTRES IN MADURAI DISTRICT

Dr. C.Santhalingam, Madurai

In and around Madurai, there are more than a dozen hill abodes which served as hermitage of Jain ascetics and they were caused to be cut by then Pandya Kings, nobles and merchants. These centres are individually described and their importance are discussed below in detail.

### **Mangulam (Meenakshipuram):**

This village Mangulam lies at 20 km north east of Madurai city. A small hamlet very near to this village is now called meenakshipuram with a hill named Ovamalai alias Kalugumalai. During 1882, Rabert Sewel discovered some Tamil-Brahmi inscriptions in one of the caves at this hill. These records are the earliest Tamil- Brahmi Jain records so far discovered in Tamilnadu and are dated back to 200 BCE by Iravatham Mahadevan. Some other scholars claim the date of these records to 300 to 500 BCE.

Totally there are five natural caverns in this hill and these caverns are cut with dripledge for draining the rain water outside of the caves. More than a dozen rock beds are strewn in each cave; particularly the last cave, where in Nedunchezhan name found, has 34 stone beds and a canal to drain the natural spring water out. Among the total six inscriptions, two of them have the name Nedunchezhan and some other epithets such as Valuthi, Kadalan, Panan, Kavithi, Nigamathor etc. The first record reads as,

'Kaniy nanta Sriy Ikuvanke dammam iththa  
Nedunchazhiyan

Panaan Kadalaan Vazhuththy kottupiththa Paliy'  
An official of Nedunchezhan, Kadalan Vazhuthi, by name was caused to be created this adode for the benefit of a Jaina monk KaniNantha Srikuvan, is the meaning of the inscription.

Very near to the first record, another record is engraved which reads as,

**'Kaniy Naththiy Kodiy Avan'**

It means, this rock bed was created for Kani Naththi. The next inscription is engraved on the another cave below the dripledge. It reads as,

**"Kaniy Nantha Sriy KuAvan damam itha  
Nedunchezhiyan  
Salakan Ilanchadikan Tantai Sadikan  
Ceyiyapaliy"**

It reveals that, these rock beds were created by one Sadikan who was the father of Ilan Sadikan, the co-brother of Nedunchezhan for the benefit of Kani Nanthan.

The cave where in this inscription is engraved was once covered with full of mud and cowdung. During the year 2004, this cave was excavated and all the earth was removed and finally 34 rock beds were unearthed. These beds are in three rows with a canal by which natural spring water could be drained outside the cave. The natural spring originates from one corner of the cave and it was drained by a rock canal without wetting the rock beds in a neat way.

Another long inscription is inscribed on the face of a great bolder above a cave.

It reads as.

**"Kaniy Natha Sriykuva (n) Velaraiy Nikamathu  
Kavithiy**

**Kalithika Anthai Asuthan Pinavu Kodupithon'**

This record denotes that, this rock shelter was created by certain Kalithika Anthai Asuthan by name who was a member of Vellaraiy Nikama and Kavithi title holder for the benefit of Kani Nantha Sri kuan. Some important informations are found in this record. It refers to one 'Vellarai Nikama', that is one merchantile guild nikama was functioning at the village Vellarai. The prakrit word Nikama is mentioned here as Nikamam. The donor has got the title 'Kavithi' which was awarded on those days by the kings who were remarkable achievers in their respective profession. This term 'kavithi' is also





referred to in Siththannavasal (Pudukkottai Dt) and Thirumalai (Sivagangai Dt) Tamil-Brahmi records also in the same meaning.

According to Iravatham Mahadevan, the term Kalithikan means one who was an expert in assessing pearls. The word 'Pinavu' means the cave just like pilavu (Cleavage) The ancient village name Vellarai, can be traced now very near to Mankulam in the name of Vellarippatti.

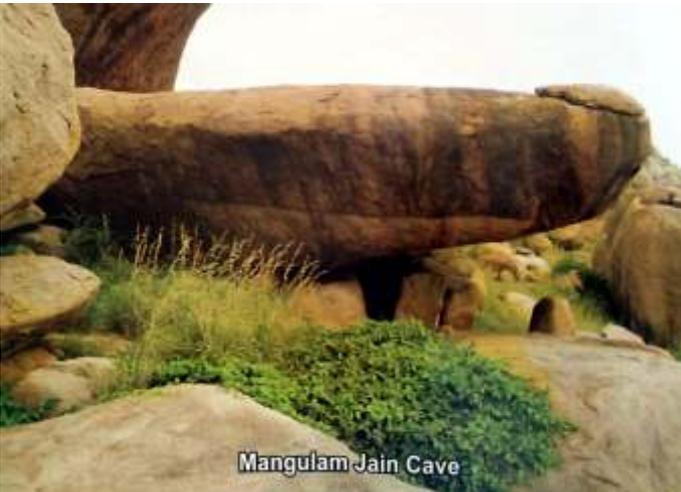
The another small record is engraved on the face of another bolder and reads as 'Santharithan Kodupithon'. It means this cave and beds are donated by one Santharithan. Very near to this record, one more small inscription is also found which reads as,

"Vel Arai Nikamathor Kotiyor"

It means that this cave and beds were made by the members of the Nikama of Vellarai.

In these total six records some Prakrit words and northern Brahmi letters are mixed. Because of these it is assumed that these inscriptions were engraved by the merchants and royal officials for the Jain monks who migrated from North India and settled here.

The northern Brahmi letters such as Sa, Sri, Su and Dha and the northern words like Salakan, Asuthan, Nigamam, Dhamam etc are mixed in some of these records. Senior Epigraphists, assessed the date of these records to belong 300-200 BCE and considered these are the earliest Tamil-Brahmi Jain records so far discovered in Tamilnadu. Since these inscriptions are engraved in the caves which served as the abodes of Jain monks the origin of these scripts is also associated with Jain monks. But the discovery of Pulimankombai



Mangulam Jain Cave

herostones during 2004, put an end to these assumptions and speculations.

Since Pulimankombai records are devoid of northern Brahmi letters and Prakrit words, and associated with the burial rituals of common man without the connection of any religious sentiments, the age of the origin of Tamil Brahmi is pushed forward to one more century (ie 400 BCE) by some scholars (K. Rajan)

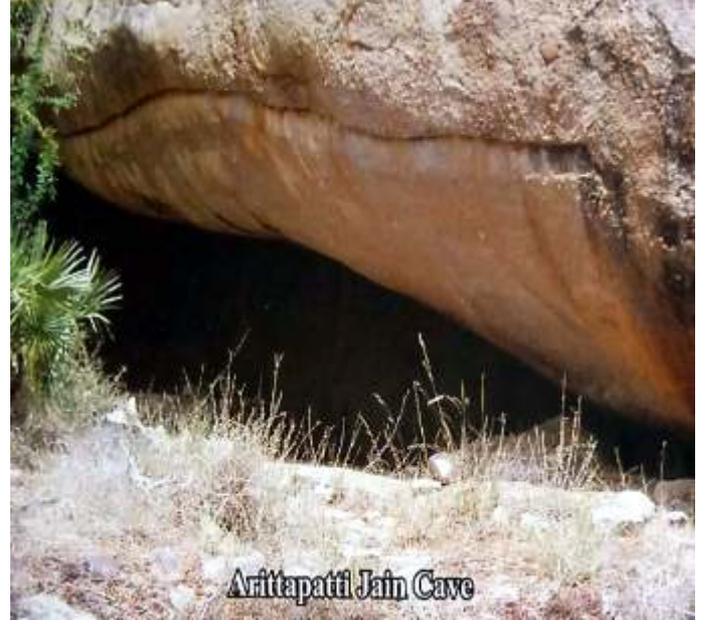
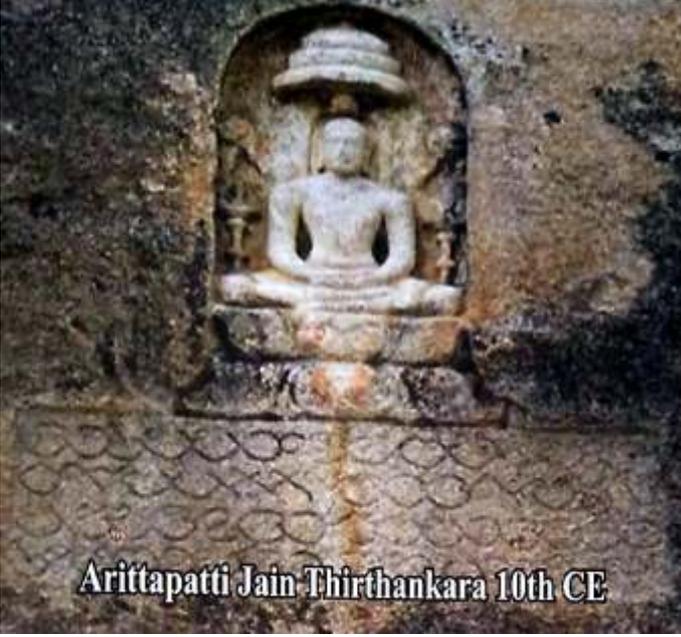
The rock surface where Mangulam Brahmi records are found was excavated during 2007 by the department of Archaeology, Government of Tamil nadu. By this excavation one brick structure was unearthed very near to the first cave of Mangulam Hill. This brick structure consists of two large spacious halls with eleven course of brick foundation. The bricks were uniformly 33x18x5 cms in size. The two halls might have been used as prayer halls which were paved with burnt bricks. The roof might have been covered with grooved tiles with rafters and iron nails. The grooved tiles have holes at the centre for fixing them with reapers by nails. Number of Iron nails were collected in various sizes during the excavation. These prayer halls might have been used by the local Jain followers who lived around Madurai (Sravakas) where as the monks might have been residing at the nearby caves where the Tamil- Brahmi inscriptions are seen.

### Arittapatti

This village is located at about 20 kms distance in the Madurai- Trichi highway before Melur. The name Arittapatti is in vogue orally by the people but no revenue or historical records attest this name. The 22<sup>nd</sup> Thirthankara of Jainism is called as Neminatha as well as Arittanemi. It may be assumed that this village is named after him. One record at Kalugumalai (Tuticorin District) refers to one Arittanemipadarar probably a Jain saint.

On the western side of Arittapatti one hamlet is located in the name Ilamai Nayakipuram. Very near to the hamlet a hillock Kalinjamalai lies, with a natural cavern on its eastern side. Within this natural cavern, rock beds are hewn for the stay of Jaina monks but now these are encroached by the local people as cattle shed. The face-forhead of the cave is cut with dripledge so as to drain the rain water out of the cave.

Two Tamil-Brahmi inscriptions are engraved one at



the bottom of the dripledge and another above the dripledge. The first inscription was discovered during 1971 by professors K.V. Raman and Y. Subbarayalu. The second record was discovered by the officials of the department of Archaeology government of Tamilnadu during 2003. Both these inscriptions are datable to 200 BCE (ie) contemporaneous to Mangulam records. The first record reads as

'Nelveliy Silivan Athinan Veliyan Muzhakai Kodupithon' It means that this rock shelter was donated by certain Athinaveliyan of Nelveli. This Nelveli can be identified with present day Thirunelveli. The term 'Silivan' may be taken as a corrupted form of 'Chezhiyan' the Pandya epithet. The name 'Athinan' is referred to in one led coin collected from Andipatti in Thiruvannamalai district. Veliyan

was a proper name normally in vogue during Sangam period. Ex. Thithan veliyan. The term Muzhakai means the cave. The same word is mentioned in one of the Varichiyur (Kunnathur) record also. Previous readers of this record gave different readings for some words. But the correct reading is given by Irvatham Mahadevan in his voluminous work (2003&2013). The second inscription reads as

**'Iancy Elam perathan makan Emayavan immuzakaiy Kodupithavan'**

It means this cave was created by one Emayavan son of Elamperathan who hailed from Hancy village. The village Iancy can be identified with the village near Courtallam with same name. Both the villages Iancy and Nelveli are located in the southern most Pandya region and so the chieftains of Pandya rulers might have been caused to be cut this cave as a sign of patronizing Jainism. Scholars have opined that the second record can be dated some what carler than the first record.

Just ten feet distance of these records, one more Jaina Thirthankara image has been exquisitely carved and an inscription is also engraved below the figure. This sculpture and record in vatteluthu character in Tamil language can be fixed to belong 9-10 Century CE. Some scholars identified this figure with Athinatha, It is seated in arthapariyanka asana, with triple umbrella above the head. Two fly whisks are also found one on each side of the head. Two lamps are also carved one on each side of the figure. The

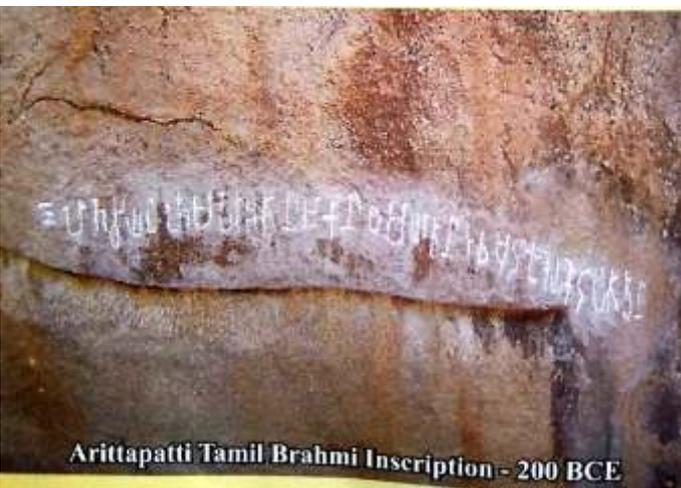




image is seated on a well blossomed lotus flower. The sculpture is covered with a thin coat of well ground lime and various colours are painted on fresco technique. Yellow, red and green colours are still brightly seen against the ravages of time and attesting a good example for early Pandyan sculptural art and painting.

Below the figure the inscription is cut on four lines in Vatteluthu script. It reads as

**'Sri Thiruppinaian malai  
PorkottuKaranaththar peral  
Accanathi ceyviththa thirumeni  
Pathirikudiyar rakshai'**

By this record, the name of the hill is known as Thiruppinaianmalai. The PorkottuKaranaththar means an official group. The saint Accanathi had caused to be cut this sculpture. The original name of the village is known as Pathirikudi whose residents had assured to protect this stone image.

This sculpture might have been carved during 9-10 Century CE when Jainism was rejuvenated after the bakthi movement. Accanathi sanits name is found in at least 10 Jain centers around Madurai. So, he might be instrumental for the rejuvenation of this religion around Pandya country. The village Arittapatti can be reached by frequent city buses form Madurai city.

### **Alagarmalai**

Among the eight ancient Jain hills Alagarmalai is very famous one and it is named as Irungundram. This hill is named after Vishnu, the presiding deity of Vaishnavism, Alagar and so it is now called Alagarmalai. But in ancient literature it is mentioned as Thirumal (Vishnu) irunjolaimalai. Mahavira, the Jaina 24<sup>th</sup> Thirthangara is also named as AniyathaAlagar (Beautiful without dress) Hence in both ways, the name Alagarmalai is very appropriate for this hill. At the middle of the hill range, very near to Kidaripatti village, one spacious natural cavern is seen. It can be reached by steps and iron ladder with some cautious effort.

On the face of the rock in the cave, some Tamil-Brahmi inscriptions are engraved at about 20 ft height. Totally 13 inscriptions are so far noticed and deciphered among them one alone engraved on the surface of a rock bed (head portion). This cave might have been occupied by the local tribal people before the advent of Jains. Number of pre-historic paintings



drawn with red ochre and white are seen on the ceiling of the natural cavern. Hunting scenes, animal figures, deer, ladder, triangles, human figures are seen clearly. It can be surmised that this place might have been approached by the saints of Jainism in order to convert them to their religious faith. Drip ledge is also cut to drain the rain water out of the cave. One natural water fountain is also seen on one side of the cave in which water is full in all seasons. This water fountain might have been serving as a drinking water source for the Jaina ascetics in ancient times.

Below the dripledge 12 inscriptions are engraved, the last one is cut on the head portion of a rock bed on the floor of the cave. Among these 13 records, the name Madurai is mentioned in two records with some corruption. Madurai is written as Mathirai and Matthirai. Madurai salt merchant, Madurai goldsmith are mentioned with their native place. The other traders who engaged in trading cloth, sugar, iron etc are also mentioned in the records. Some symbols are also seen at the end of some inscriptions. Sapamitha and Pammithi, the two lady saints names are also recorded here. At the eastern end of the dripledge, one Thirthankara figure is engraved as a line drawing below which one vatteluthu inscription 'Sri Accanathiceyal' is seen. According to the paleography this vatteluthu record is dated to 9-10 Century CE. But the Tamil Brahmi records belong 200-300BCE.





## आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज : युग के महान आचार्य

डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

### जो दिखता है वह बिकता है

हमारे व्यापारी भाई इस बात को अच्छे से समझते हैं इसी कारण वे अपनी दुकान की सभी अच्छी चीजें जमाकर बाहर रखते हैं जिससे दिखे। आचार्य शांतिसागर छाणी महाराज की परम्परा के संतों ने आत्म साधना पर तो ध्यान दिया किन्तु अपनी गुरु परम्परा की उपलब्धियाँ को प्रचारित करने का लक्ष्य नहीं रखा फलतः विगत 40-50 वर्षों में उनके अवदान को विस्मृत कर दिया गया।

आत्म कल्याण के महान लक्ष्य को केन्द्र में रखकर दीक्षा लेने वाले दिगम्बर जैन संत सांसारिक प्रपंचों से दूर रहते हैं। इस स्थिति में समकालीन एवं भावी पीढ़ी को स्वयं का परिचय देने हेतु कुछ लिखने की संभावना कम रहती है। चंचल चित्त की प्रवृत्तियों को एक स्थान पर केन्द्रित करने अथवा शिष्य समुदाय को आध्यात्मिक या कर्म सिद्धान्त को स्पष्ट करने हेतु कमशः द्रव्यानुयोग एवं चरणानुयोग के ग्रन्थों की टीकाओं / व्याख्याओं अथवा उनके सरलीकरण हेतु स्वतंत्र ग्रंथों के मुनियों द्वारा सृजन के अनेक प्रमाण हैं। परम्परा के संरक्षण एवं श्रावकों में श्रद्धान को प्रबल करने हेतु अथवा आगमोक्त चर्या एवं जीवनशैली के प्रचार-प्रसार हेतु कमशः प्रथमानुयोग एवं चरणानुयोग के ग्रन्थ भी विपुल परिणाम में लिखे गये जो आज भी जैन शास्त्र भंडारों में संरक्षित हैं किन्तु स्वयं का परिचय देने वाले ग्रन्थ नहीं लिखे गये। हमारी महान मुनि परम्परा के बारे में जो कुछ भी आज उपलब्ध है वह ग्रन्थों की प्रशस्तियों में तथा शिष्यों द्वारा गुरु परम्परा के गौरव में किये गये लेखन से ही प्राप्त होता है।

आचार्य श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज ने अपना जीवन वृत्त न तो स्वयं लिखा न लिखावाया।

सविनय नमोस्तु पुस्तक में पं. नीरज जी जैन ने लिखा है कि सौभाग्य से 'छाणी' महाराज के एक सुधी शिष्य ब्रह्मचारी भगवानसागरजी द्वारा 65 वर्ष पूर्व लिखा हुआ आचार्य श्री का अधूरा जीवन चरित्र किसी शास्त्र भण्डार से ढूँढ निकाला गया। यह जीवनी एक छोटी पुस्तिका के रूप में गिरिडीह के ब्र. आत्मानन्द जी ने सन् 1927 में लखनऊ के शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस से प्रकाशित की थी। (देखें पृ. क.10)

गत शताब्दी के मूर्धन्य जैन विद्वान एवं प्रसिद्ध लेखक बाबू कामताप्रसाद जी जैन, जो आचार्य शांतिसागरजी के समकालीन थे, ने 927 में स्पष्ट लिखा:—

'मुझे यह कहने में भी कुछ संकोच नहीं कि शांतिसागरजी महाराज इस काल में एक साधुरत्न हैं। उनसे धर्म की प्रभावना है और वे हमारे हित चिंतक हैं। उनकी भक्ति और विनय करके हम पुण्य का उपार्जन इस पंचमकाल में भी कर सकते हैं। जिन दिगम्बर मुनिराजों की कथाएं हम पुरातन ग्रंथों में ही पढ़ते थे, उनके प्रत्यक्ष दर्शन करने का

सुअवसर आज प्राप्त हो गया है। यह हमारा अहो भाग्य है।' आइये ऐसे महान संत की जीवन यात्रा के बारे में भी कुछ जान ले।

#### जीवनवृत्त :

प्रशामूर्ति, आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज का जन्म राजस्थान प्रान्त के उदयपुर नगर के समीप 'छाणी' ग्राम में हुआ था, फलस्वरूप आप छाणी वाले महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपका जन्म कार्तिक वदी ग्यारस वि. सं. 1945 तदनुसार ई. सन् 1888 में पिता श्री भागचन्दजी एवं माता श्रीमती माणिक बाई के यहाँ हुआ। आपका जन्म नाम केवलदास था। बाल्यावस्था से ही आपमें अध्यात्म के बीज अंकुरित होने लगे थे, फलस्वरूप बाल ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार करने के उपरांत आपने वि.सं. 1979 अर्थात्सन् 1922 को गढ़ी (जिला-बाँसवाड़ा) राजस्थान में क्षुल्लक दीक्षा एवं एक वर्ष पश्चात भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि. सं. 1980 तदनुसार सन् 1923 को राजस्थान प्रांत के सागवाड़ा नगर में दिगम्बरत्व पद स्वीकार कर श्रमण परम्परा के पायदान पर अपने कदम बढ़ाये और पद विहार कर भव्य जीवों को धर्मोपदेश देते हुए सम्पूर्ण भारत विशेषतः उत्तर भारत को अपनी धर्म प्रभावना का क्षेत्र बनाया।

#### समाजसुधारक :

आप एक सच्चे समाज सुधारक रहे, फलतः आपने समाज में प्रचलित तात्कालिक कुरीतियों को दूर करने का साहसिक प्रयत्न किया। मृत्यु उपरांत छाती पीटने की प्रथा, दहेज प्रथा, बलि प्रथा, कन्या विक्रय प्रथा, विधवा स्त्री को काले कपड़े पहनाने की प्रथा आदि का विरोध किया। आपके अहिंसात्मक एवं धर्ममय प्रवचनों के माध्यम से इन प्रथाओं पर बंदिश लगी और मानवीय जीवन अहिंसा के पायदानों पर गतिशील होने लगा। अनेकों ने अहिंसा धर्म अंगीकार कर निज जीवन में संस्कारों का पौधारोपण कर सुख-शांति-समृद्धि की ओर अपने को प्रतिष्ठित किया। आपके गिरिडीह (झारखण्ड) प्रवास पर संस्कारित प्रवचनों से प्रभावित होकर एवं आगमोक्त चर्या को देखकर स्थानीय समाज ने वि.सं. 1983 (सन् 1926) में आपको आचार्य पद पर पदासीन कर दिया गया।

आचार्य शांतिसागरजी 'छाणी' की जीवन गाथा वास्तव में आस्था, निष्ठा, साहस और दृढ़ संकल्पों की गाथा है। उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने के लिये हमें उनके जीवन की हर घटना को तत्कालीन समय और समाज के परिप्रेक्ष्य में ही समझना होगा।

प्रायः 'छाणी' वाले महाराज के व्यक्तित्व को उनके समकालीन चारित्र-चकवर्ती पूज्य आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज (दक्षिण) के साथ तुलना करके देखा जाता है। इस प्रकार की दृष्टि से न तो महाराज को समझा जा सकता है और न ही किसी के व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन करना सम्भव हो सकता है। इसलिये दोनों महात्माओं का, एक-दूसरे से निरपेक्ष



और निष्पक्ष मूल्यांकन करके ही उन्हें समझना चाहिए, तभी उनके वंदनीय-व्यक्तित्व का सही दर्शन हो सकेगा। इसके बावजूद काल की दृष्टि से चारित्र्यकवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी (दक्षिण) के समकालीन प्रशाममूर्ति, आचार्य श्री शांतिसागर जी 'छाणी' (उत्तर) थे। चारित्र्यकवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी यद्यपि आयु में आचार्य शांतिसागरजी 'छाणी' से 15-16 वर्ष बड़े थे, परन्तु दोनों के दीक्षा संस्कारों में अधिक अन्तर नहीं था। एक दृष्टि में यदि हम जानना चाहें तो उनका विवरण इस प्रकार है।

	जन्म ई. सन	क्षुल्लक दीक्षा	मुनि दीक्षा	आचार्यपद प्राप्ति	समाधि प्राप्ति
आ. शांतिसागरजी (द.)	1872	1915	1920	1924	1955
आ. शान्तिसागर 'छाणी' (उ.)	1888	1922	1923	1926	1944

इससे स्पष्ट है कि छाणी महाराज को मुनि / आचार्य अवस्था में धर्म प्रचार हेतु केवल 22 वर्ष का समय मिला। इतना विशेष है कि आचार्य शांतिसागरजी (दक्षिण) ने क्षुल्लक दीक्षा के थोड़े दिन उपरान्त गिरनार पर्वत पर वस्त्र-खण्ड त्याग कर ऐलक पद अंगीकार कर लिया और बाद में कई वर्षों तक उसी वेश में वे विहार करते रहे। यह भी ध्यान में रहना चाहिए कि यद्यपि उन्हें 'चारित्र-चकवर्ती' की उपाधि से कई वर्षों बाद विभूषित किया गया था, पर कालान्तर में ही 'चारित्र-चकवर्ती' सम्बोधन उनके लिए रूढ़ हो गया और उस नाम से ही उनकी पहचान होने लगी।

इस प्रकार साधना के क्षेत्र में चारित्र-चकवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी, आचार्य श्री शांतिसागरजी 'छाणी' से हर रूप में वरिष्ठ थे। 'छाणी' वाले महाराज ने उनकी इस वरिष्ठता का सदा उदारतापूर्वक सम्मान दिया। दोनों आचार्यों में एक-दूसरे के लिए संत-सुलभ वात्सल्य और आदर का भाव था।

'छाणी' वाले महाराज उत्तर भारत में विहार करने वाले प्रथम दिगम्बर जैन आचार्य रहे, परन्तु इसमें इतना ध्यान रखना होगा कि उनके मुनि दीक्षा लेने के सात-आठ वर्ष पूर्व, सन् 1944 या 15 में दक्षिण के एक और मुनि श्री अनन्तकीर्ति जी 'निल्लीकर' मथुरा, आगरा आदि नगरों में रुकते हुए मुरैना पहुँचे थे।

वास्तव में तो छाणी वाले महाराज ही ऐसे प्रथम मुनिराज थे, जिन्होंने उत्तर भारत के नगरों की दूर-दूर तक पद यात्रा करके दिगम्बर साधु के विहार का मार्ग प्रशस्त किया। उनके जीवन-वृत्त से ज्ञात होता है कि सन् 1927 में, जब चारित्र-चकवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी का संघ सम्मेदाचल की वन्दना का ध्येय बनाकर कुम्भोज से नागपुर की ओर प्रस्थान कर रहा था, तब जनवरी 1927 तक पूज्य मुनि श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज राजस्थान के अनेक स्थानों में भ्रमण करते हुए और इन्दौर तथा ललितपुर में अत्यन्त प्रभावक चातुर्मास व्यतीत करते हुए, पूरे मालवा, बुन्देलखण्ड और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में विहार कर चुके थे। इसी बीच मालवा के हाटपीपल्या में उन्होंने अपने प्रथम शिष्य के रूप में ऐलक

सूर्यसागरजी को मुनिदीक्षा भी प्रदान की।

मुनि श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज ने सन् 1926 ई. में अपने संघ सहित कानपुर, लखनऊ, गोरखपुर, अयोध्या और बनारस आदि उत्तरप्रदेश के प्रमुख नगरों में विहार करते हुए शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री शिखरजी की यात्रा के लिए विहार किया। पिछली अनेक शताब्दियों के ज्ञात इतिहास में यह पहली घटना थी, जब कोई दिगम्बर मुनि दूर से भ्रमण करते हुए, अपने संघ के साथ पर्वतराज की वन्दना के निमित्त से वहाँ तक पहुँच रहे थे। ब्र. जी ने 'छाणी' वाले महाराज की इस अभूतपूर्व यात्रा का अपनी पुस्तक में सरस वर्णन किया है। जो इस प्रकार है-

**'मुनिजी के आगमन का समाचार सुनकर श्री शिखरजी वीसपंथी कोठी के मुनीम और हजारीबाग के जैनी शिखरजी से हाथी लेकर मुनि श्री की अगवानी के लिए उनके पास आये। जब मुनिश्री ने पूछा कि - 'हाथी क्यों लाये हो?'' तब कहने लगे कि- प्रभावना के निमित्त से खुशी में लाये हैं, क्योंकि आज तक, कोई मुनि महाराज, सौ-डेढ़ सौ वर्षों के बीच में अभी तक यहाँ नहीं आये हैं। इसीलिये धर्म-प्रभावना बढ़ाने के लिये हम श्रावकों का जो कर्तव्य था, सो वहीं हमने किया है।'**

इसके एक-डेढ़ वर्ष बाद चारित्र-चकवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी अपने विशाल संघ सहित दक्षिण से श्री सम्मेदशिखरजी की वन्दना हेतु पधारे।

'छाणी' महाराज ने ज्येष्ठ बदी दशमी वि.सं. 2001 तदनुसार 17 मई 1944 को राजस्थान प्रांत के सागवाड़ा नगर में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर काया को त्याग दिया। आपके पश्चात आपके आज्ञानुवर्ती शिष्य पूज्य आचार्य श्री 108 सूर्यसागरजी महाराज ने आचार्य श्री शांतिसागरजी (छाणी) महाराज की परम्परा को गतिशील रखा। इसी महान परम्परा के षष्ठ पट्टाचार्य, राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागरजी वर्तमान में साधनारत है। पूज्य आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महाराज 'छाणी' ने अपने श्रमण काल में निम्नवत् 22 वर्षायोग किये थे-

**(अ) क्षुल्लक अवस्था में -**

- (1) वि.सं. 1979 (सन् 1922), परतापुर (राज.)
- (2) वि.सं. 1980 (सन् 1923), सागवाड़ा (राज.)

**(ब) मुनि अवस्था में -**

- (3) वि.सं. 1981 (सन् 1924), इन्दौर
- (4) वि.सं. 1982 (सन् 1925), ललितपुर

**(स) आचार्य अवस्था में -**

- (5) वि.सं. 1983 (सन् 1926), गिरिडीह
- (6) वि.सं. 1984 (सन् 1927), परतापुर
- (7) वि.सं. 1985 (सन् 1928), ऋषभदेव
- (8) वि.सं. 1986 (सन् 1929), सागवाड़ा
- (9) वि.सं. 1987 (सन् 1930), इन्दौर
- (10) वि.सं. 1988 (सन् 1931), ईडर



- (11) वि.सं. 1989 (सन्1932), नसीराबाद
- (12) वि.सं. 1990 (सन्1933), ब्यावर
- (13) वि.सं. 1991 (सन्1934), सागवाड़ा
- (14) वि.सं. 1992 (सन्1935), उदयपुर
- (15) वि.सं. 1993 (सन्1936), ईडर
- (16) वि.सं. 1994 (सन्1937), गलियाकोट
- (17) वि.सं. 1995 (सन्1938), पारसोला (राज.)
- (18) वि.सं. 1996 (सन्1939), भींडर
- (19) वि.सं. 1997 (सन्1940), तालोद
- (20) वि.सं. 1998 (सन्1941), ऋषभदेव (राज.)

(21) वि.सं. 1999 (सन्1942), ऋषभदेव (राज.)

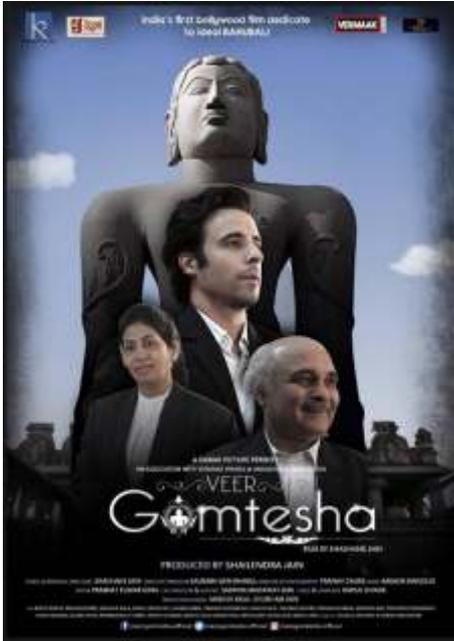
(22) वि.सं. 2000 (सन्1943), सलुम्बर (राज.)

पूज्य आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी (छाणी) महाराज का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था। आपने मुनि दीक्षा, ऐलक-क्षुल्लक एवं ब्रह्मचारी दीक्षार्थे देकर अनेक जीवों पर महान उपकार किया है। आपने अपने श्रमणकाल में मुनि ज्ञानसागरजी (धार वाले), मुनि मल्लिसागरजी, मुनि सूर्यसागरजी, मुनि आदिसागरजी, मुनि नेमिसागरजी, मुनि वीरसागरजी एवं क्षुल्लक धर्मसागरजी आदि को दीक्षा देकर श्रमण संस्कृति को समृद्ध किया है।



## जन-जन को जैन दर्शन का ज्ञान कराती फिल्म – वीर गोम्टेशा

समीक्षक - राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद



भारतीय संस्कृति में श्रमण संस्कृति की प्राचीनता का उल्लेख हर कहीं पर मिलता है लेकिन जैन संस्कृति में ऐसा क्या अलग है जो जन-सामान्य को समझ में आए, इस बात को लेकर कई प्रयास हुए हैं उन्होंने प्रयासों में से एक है - वीर गोम्टेशा।

समाधिमरण, संथारा, सल्लेखना कई नामों से प्रचारित जीवन जीने की कला को

आत्महत्या कहने का दुस्साहस भी किया गया, लेकिन जिस जैन धर्म की आत्मा ही समाधि हो, उसे या तो किसी ने समझा नहीं या जैन धर्मावलंबियों की आत्ममुग्धता के कारण भी यह विषय जन सामान्य तक नहीं पहुंच पाया। विगत दिनों रीलजि हुई 2 घण्टे 15 मिनट की फिल्म वीर गोम्टेशा में यह बताने का सार्थक प्रयास किया गया कि जैन धर्म क्या है? जैन रात्रि भोजन क्यों नहीं करते? जैनियों के द्वारा तामसिक भोजन प्याज, लहसून आदि का प्रयोग क्यों नहीं किया जाता? महामस्तकाभिषेक क्या है? किस तरह से युवाओं का हृदय परिवर्तन होता है।

धर्म रटने, क्रियाकाण्ड करने की विषय वस्तु न होकर केवल और केवल समझने का विषय है, जो समझता है, वह भटकता नहीं। वह अड़ता नहीं, लड़ता नहीं। इन सारी बातों को एक श्रेष्ठ कथावस्तु के माध्यम से, श्रेष्ठ

संवाद, व शानदार पिक्चराईजेशन के माध्यम से दिखाने का प्रयास हमारे निमाड़ के श्री शशांक-शैलेन्द्र जैन ने किया है। संपूर्ण फिल्म दर्शक को न केवल सोचने पर मजबूर करती है बल्कि यह भान कराती है कि सही क्या है? गलत क्या है?



जैन धर्म की अनेकांतिक दृष्टि व स्याद्वाद की शैली जहां संपूर्ण विश्व को एक दृष्टि प्रदान करती है वहीं यह बताती है कि कर्म सिद्धांत क्या है। हमारे जीवन में अच्छा बुरा क्यों? व कैसे होता है। अभिनेता ने न केवल अपने चरित्र के साथ न्याय किया है बल्कि अपने अभिनय से सभी को बांधे रखते हुए विषय वस्तु के साथ न्याय किया है। फिल्म के निर्माता निर्देशक, पटकथा एवं संवाद लेखक श्री शशांक शैलेन्द्र जैन खरगोन जिले के छोटे से ग्राम साटकुट (कसरावद) में जन्में हैं जो सिद्धक्षेत्र पावागिरीजी ऊन व सिद्धवरकूट, बावनगजा के नजदीक है। मात्र 30 वर्ष की उम्र में राजश्री पिक्चर्स मुंबई व प्रसिद्ध फिल्म निर्माता प्रकाश झा जैसे बड़े व्यक्तित्वों के साथ काम कर चुके शशांक ने अपने फिल्मी सफर में कई मुकाम हासिल किए। उनके द्वारा बनाई गई फिल्म वीर गोम्टेशा को कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जो कि संपूर्ण निमाड़ के साथ राष्ट्रीय स्तर की जैन समाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

फिल्म में मुख्य अभिनेता रोहित मेहता, साधना मादावत, सुशील जोहरी, सौरभ जैन आदि कलाकार अपने आप में फिल्म के उद्देश्य के प्रति समर्पित व सक्षम दिखाई दिये हैं। अतिशयकारी तीर्थ श्रवणबेलगोला सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट, इन्दौर, मुंबई आदि स्थानों पर फिल्मांकित वीर गोम्टेशा के दृष्यांकन को सार्थकता प्रदान करते हैं। इस फिल्म को श्रेष्ठतम बनाने में अनेक संतों का आशीर्वाद व मार्गदर्शन मददगार साबित हुआ है।

महासती मैना सुन्दरी के बाद जैन दर्शन की आत्मा, समाधि, संलेखना, संथारा के साथ जैन जीवन पद्धति को श्रेष्ठतम रूप में दर्शाती यह फिल्म जैन-जैनेतर सभी को सार्थक सन्देश प्रदान करती है, जिसे देखने का हम सबका कर्तव्य बनता है।





## एक दिन के मुनाफे से निर्मित अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी (गढ़ाकोटा), सागर

- राजेंद्र जैन 'महावीर', सनावद

विश्व में अद्वितीय, अप्रतिम व अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति की गरिमामय झांकी के दर्शन इसके चिर पुरातन देवालियों और उनमें विराजित प्रतिमाओं, गिरि कन्दराओं में उत्कीर्ण भित्ति चित्रों, स्तम्भों पर अंकित लेखों आदि में होते हैं। भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम शिल्प के रूप में जैन धर्म का



अपना एक विशिष्ट महत्व है। श्रुत वर्णित जिनालयों, देवालियों, गिरि कंदराओं में उत्कीर्ण शिल्प कौशल भारतीय वास्तुकला में अपना अद्वितीय अनुपम स्थान रखती है। ऐतिहासिक साक्ष्यों के द्वारा यह प्रमाणित होता है कि भारतवर्ष में आर्यों के आगमन से पूर्व यहां के निवासी 'श्रमण संस्कृति' के उपासक थे।

### श्रमण संस्कृति का पावन पवित्र तीर्थ है पटेरियाजी

तीर्थ हमारे आध्यात्मिक जागरण के साधन है, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप वातावरण का प्रभाव चित्त वृत्ति पर पड़ता ही है। जीवन में प्रेरणा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति विशेष के जीवन और स्थल विशेष की घटनाएं बहुत बड़ा काम करती हैं।

ऐसी ही एक घटना जो अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी से हमको सहज ही जोड़ देती है। हम जीवन में अनेक प्रवचन सुनते हैं, धर्म की बातें करते हैं, लेकिन अपना नहीं पाते हैं। यही हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। हम सबके लिए बड़े कौतुहल का विषय होता था जब पूज्य पिताजी स्व.सेठ



श्री पूरनचंदजी हमें बड़े गर्व से बताते थे कि हमारे गाँव गढ़ाकोटा में एक दिन की रुई मुनाफा से एक मंदिर बना जो आज अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी कहलाता है। बचपन से कई बार यह बात उनके मुख से सुनी व वहां जाकर देखा तो निरीह शांत वातावरण में चैतन्य चमत्कारी भगवान पार्श्वनाथजी की

प्रतिमाएं मानों अपनी नासाग्र मुद्रा के साथ पद्मासन में हमसे कह रही हो कि 'मेरे दर्शन से स्वयं के दर्शन कर लो'। जिस इच्छा कामना से तुम संसारी जीव मेरे पास आते हो, उनका त्याग करके ही हम यहां पहुंचे हैं और जिस मंदिर के दर्शन कर रहे हो वह नश्वर धन का त्याग कर पवित्र निर्मल भावना से निर्मित हुआ है।

लगभग 300 वर्ष पहले यह नब्बे फीट ऊँचा गगन चुम्बी जिनालय बनोंनया वंश के श्रावक शिरोमणि श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन ने अपने रुई के व्यापार के एक दिन के मुनाफे से बनवाया है। इतना ही नहीं, मंदिर में तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ की तीन प्रतिमाएं साढ़े सात फीट ऊँची

विराजमान कराकर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव भी कराया है। संसारी प्राणी श्रावक शिरोमणि श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन से प्रेरणा लो। यह धन नश्वर है। इसका उपयोग कर लो तो जीवन सार्थक है। अन्यथा जैसे आए हो वैसे ही बिना किसी उद्देश्य के जीवन से चले जाओगे।



### दर्शन से उपतजी हैं भावनाएं

जैन प्रतिष्ठा विधान में उल्लेख है कि जिन मंदिर बनाने वाले, प्रतिष्ठा कराने वाले, प्रतिमा विराजमान कराने वाले, प्रतिमा निर्माण करने वाले शिल्पी सभी की भावनाएं निर्मल व पवित्र होनी चाहिए। अन्यथा प्रतिमा का प्रभाव उतना नहीं होता जितना प्रतिष्ठा मंत्रों के बाद होना चाहिए।

हमारे सामने उदाहरण है तीर्थक्षेत्र श्रवणबेलगोला के बाहुबली स्वामी 1041 वर्ष से जैन धर्म की प्रतिष्ठा को विश्वव्यापी किये हुए हैं। ऐसे ही बुंदेलखण्ड की प्राचीन धरा पर जहां द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शुद्धि आज भी देखने को मिलती है। उस समय कितनी पवित्र भावना होगी जिसका प्रभाव आज भी है और आगे भी रहेगा। क्योंकि जैन दर्शन में भावों की निर्मलता, भावों की विशुद्धता ही श्रद्धा व सम्यक्त्व उत्पन्न कराने में सहायक होती है। जिसका कारण है कि पटोरियाजी की ऊर्जामयी भूमि से अनेक त्यागी हुए हैं जिनमें पाँच त्यागी वृंद दिगम्बरत्व की प्रभावना में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

गढ़ाकोटा के गौरव के रूप में पूज्य उपाध्याय मुनिश्री गुप्तिसागरजी का नाम अग्रगण्य साधकों में से एक है। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित श्री गुप्तिसागरजी महाराज आज देश के प्रख्यात साधक हैं जिन्होंने न केवल अपनी साहित्य साधना की है बल्कि अपनी वात्सल्यमयी प्रवचन शैली से देशभर में शाकाहार, जीवदया, अहिंसा, करुणा का प्रचार किया है व अनेक जिन मंदिरों के प्रेरणा स्रोत बने हैं। साथ ही गढ़ाकोटा नगर के प्रथम दिगम्बर मुनि के रूप में आपकी पहचान है।

साथ ही गढ़ाकोटा के गौरव मुनिश्री अजितसागरजी, मुनिश्री प्रार्थनासागरजी, आर्यिका आगतमती माताजी, ऐलकश्री सिद्धांतसागरजी महाराज संपूर्ण देश में दिगम्बरत्व का गौरव स्थापित किये हुए हैं। यह गढ़ाकोटा के अतिशयकारी तीर्थ पटोरियाजी व गढ़ाकोटा नगर में निर्मित भव्य जिनालयों की प्रतिमाओं का ही प्रताप है जिससे प्रेरणा लेकर ये तपस्वी जिनधर्म की पताका को थामे हुए हैं।

### भट्टारक महेन्द्रकीर्ति ने कराई थी प्रतिष्ठा

भट्टारकों को जिनधर्म के ग्रंथ बचाने व धर्म को सुरक्षित रखने का श्रेय दिया जाता है। दक्षिण भारत का इतिहास तो भट्टारकों की यशोगाथा से भरा पड़ा है। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति का उल्लेख सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में भी आता है। उन्होंने ही सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट को खोजकर पुनर्स्थापित कर प्रतिष्ठा कराई थी।

भट्टारक श्री



महेन्द्रकीर्तिजी ने अपने पवित्र भावों से जिन प्रतिमाओं का पंचकल्याणक कराई वे आज भी बोलती हुई प्रतीत होती हैं। यह दाता की पवित्र भावना व प्रतिष्ठाचार्य की निर्मलता की जीती-जागती मिसाल है कि जब गजरथ महोत्सव में पुड़ी तलने के लिए घी कम पड़ गया तो भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी ने

आदेश दिया कि 'घबराओं मत, मंदिर के मुख्य द्वार के दाहिनी ओर जो कुण्ड है उसका पानी कड़ाही में डालो, घी की कमी पूरी हो जाएगी।

कहते हैं भावना भवनाशिनी। भाव शुद्ध हो तो सब शुद्ध। भावना की शुद्धि से जो भी किया जाता है वह सफल होता है। ऐसे अनेक उदाहरणों से हमारा प्रथमानुयोग भरा पड़ा है। आज भी पटोरियाजी में भट्टारकजी की भावनाएं व अतिशय स्तम्भ सुरक्षित है।





### दिगम्बर आचार्य मुनियों का पसंदीदा स्थल

चैतन्य चमत्कारी अतिशय क्षेत्र श्री पटेरियाजी बुंदेलखण्ड के प्रमुख तीर्थों में से एक है। सुनार नदी किनारे सुरम्य वातावरण में 100 वर्ष पूर्व मुनिश्री क्षेमासागरजी की प्रेरणा से यहां विकास का क्रम प्रारंभ हुआ जो आज भी जारी है। इस युग के महातपस्वी संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने यहां प्रवास किया और तीर्थ की महिमा को बताया। उन्होंने अपनी आशीष अनुकंपा से उनके परम प्रभावी शिष्य पूज्य मुनिश्री क्षेमासागरजी एवं मुनिश्री



के स्पर्श से ज्वर पीड़ित का ज्वर उतर जाता है।

सन 1992 की घटना जो 20 अगस्त 1992 को हुई। सायं 7 बजे अशोकनगर का विनयांजलि यात्रा संघ के समक्ष भक्ति के दौरान तीनों प्रतिमाओं से अचानक जल प्रवाह होने लगा जो रात्रि एक बजे तक अनवरत जारी रहा। पूरा नगर पटेरियाजी पहुंचा व इस कलयुग में चैतन्य चमत्कारी का यह चमत्कार देखकर आश्चर्यचकित हुआ। इस तरह अनेक घटनाएं क्षेत्र पर घटित हुई हैं।

**आईये, एक बार तो चलें पटेरियाजी -** भारत देश के

गुप्तिसागरजी महाराज को 1986 व 1998 में चातुर्मास हेतु आदेश दिया, जिसका परिणाम है कि क्षेत्र पर सुविधाओं का विस्तार हुआ है।

क्षेत्र पर आज सर्व सुविधायुक्त एसी अटैच रूम उपलब्ध हैं। धर्मशाला है, हॉल है, संत निवास है। भोजनालय की सुविधा है। सभी प्रकार के संसाधन आज क्षेत्र पर उपलब्ध हैं। वहीं विकास का कार्य अत्याधुनिक ढंग से जारी है। क्षेत्र कमेटी के पूर्वज पदाधिकारियों ने अपनी सोच से इसे सींचा है। वहीं वर्तमान पदाधिकारी उसे पुष्पित पल्लवित कर अपनी सेवा का समर्पण प्रदान कर रहे हैं। वहीं क्षेत्र के विधायक गढ़ाकोटा निवासी म.प्र.सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री गोपाल भार्गव का सहयोग भी निरंतर प्राप्त होता रहता है।

**दर्शनीय है गढ़ाकोटा के जिनालय -** जैन समाजजनों की प्रभावी बस्ती गढ़ाकोटा के प्रत्येक प्रमुख मार्ग में जिनमंदिर है जो विषाल व मनोहारी है। श्री दिगम्बर जैन चौधरी मंदिर, श्री दिगम्बर जैन मंदिर पैलेपार, श्री दिगम्बर जैन मंदिर छतपुरिया, श्री भजयाई दिगम्बर जैन मंदिर, श्री नजयाई दिगम्बर जैन मंदिर, श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर दर्शनीय है। साथ ही समय की आवश्यकता अनुरूप बस स्टैंड के समीप पथरिया रोड़ पर भी श्री शांतिनाथ मंदिर का निर्माण हुआ है। श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा भी एक मंदिर बड़े मंदिरजी के पास बनवाया गया है।

**अतिशयों की प्रवाहशीलता-** जिस प्रतिमा के प्रभाव से व्यक्ति रत्नत्रय की प्राप्ति का धर्मारोधना कर स्वयं भगवान बन सकता है, जिस भूमि का निर्माण ही परम पवित्र भावना से हुआ हो वहां लौकिक इच्छाओं की पूर्ति व अतिशय होना स्वाभाविक प्रक्रिया ही बनाते हैं। इसी मंदिर को घुनधुनिया मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मध्यरात्रि में देवों द्वारा भगवान की भक्ति की आवाजें सुनी जा सकती हैं। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति द्वारा अभिमंत्रित अतिशय स्तम्भ

हृदयस्थल मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड में सागर जिला मुख्यालय से दमोह-जबलपुर मार्ग पर 45 किमी. दूर यह तीर्थ स्थित है। समीपस्थ रेल्वे स्टेशन पथरिया, दमोह, सागर है जहाँ से गढ़ाकोटा के लिए हर समय बस सुविधा भी उपलब्ध है। सर्वसुविधायुक्त तीर्थ आज भी विकास की बाट जोह रहा है। सुविधाओं को निरंतर बढ़ाना समय की मांग है।

आईये, सपरिवार चलें पटेरियाजी और श्रावक शिरोमणि श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन की निर्मलता को महसूस करें। पार्श्वप्रभु के चरणों में अपनी भावनाओं को पंख लगाएं और अपनी चंचला लक्ष्मी के सदुपयोग के लिए हम अपनी दान राशि इन खाता नंबरों के माध्यम से भेज सकते हैं - स्टेट बैंक के खाता नंबर - 11316156245, आईएफएससी कोड - SBIN0006138, युनियन बैंक खाता नंबर - 325502010004594, आईएफएससी कोड - UNIN0532550।

क्षेत्र से कुंडलपुर 70 किमी., नैनागिरी 100 किमी., पटनागंज 20 किमी., बीना बारहाजी 50 किमी., कोनी पाटन 100 किमी., मढ़ियाजी जबलपुर 140 किमी. दूर है। क्षेत्र का मोबाइल नंबर 9300581108, 9302276765 है, जिस पर संपर्क किया जा सकता है।

पटेरिया तीर्थ के बारे में विस्तृत जानकारी डॉ. भागचंद्र जैन 'भागेन्दु' दमोह द्वारा लिखित पटेरियाजी गढ़ाकोटा दीपिका व क्षेत्र कमेटी के समर्पित पदाधिकारियों व स्वयं अवलोकन द्वारा प्राप्त हुई है। चित्र भी गढ़ाकोटा के श्री अभयकुमार जैन पटेरिया इन्दौर व समर्पित क्षेत्र कमेटी ने उपलब्ध कराए हैं। लिखने की प्रेरणा मेरे पूज्य पिताजी स्व.श्री पूरनचंदजी जैन, पटेरिया क्षेत्र के मंत्री रहे स्व.श्री बालचंदजी सेठ ने दी थी।

**जय पार्श्वनाथ, जय पटेरियाजी**



## खुदाई में मिली प्राचीन प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त जिन बिम्ब विधि - विधान पूर्वक कारीटोरन में स्थापित



श्रेयांस जैन, ट्रस्टी  
डॉ. विजय जैन,  
सिंघई नरेंद्र कुमार  
जैन, श्री मुन्ना लाल  
कपाडिया, श्री  
संजय जैन, श्री सनत  
जैन अन्नू, श्री  
सकल दिगम्बर जैन  
समाज कारीटोरन के  
शकल्याण चंद, श्री  
सेठ चंद्र कुमार, श्री  
प्रकाश चंद रमगढ़ा,  
श्री अशोक कुमार  
कपासिया, श्री  
हेमचंद्र जैन, श्री  
राकेश कुमार  
लल्लू, श्री संतोष  
कुमार संतू, श्री  
रजनेश जैन, श्री

अवशेष जैन, श्री जिनेश कुमार दीपू सेठ, श्री अमर कपासिया कल्लू, श्री विकास सेठ, श्री कीर्ति कुमार कल्लू, श्री राजकुमार विक्की, सोनू, सौरभ, राही, छोटू, सहित समस्त जैन समाज कारीटोरन की ऐरादेवी दिगम्बर जैन महिला समाज की सदस्याएं एवं छोटे-छोटे बालक बालिकाएं भगवान की आगवानी के अगौड़ी गए और धूमधाम से श्रीजी को लेकर कारीटोरन आए।

जानकर इस प्रतिमा के बारे में कोई चंदेलकालीन बता रहे हैं तो कोई 15 वी शताब्दी के आसपास। इस पर अनुसंधान की जरूरत है।

इनका कहना है : मूर्ति व उसके अंगोपांग तथा बनावट को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह मूर्ति 15वीं शताब्दी के आसपास की है। इस पर अनुसंधान की आवश्यकता है।

-पुरातत्व विद एवं जैन इतिहासकार, प्रो. भागचंद्र भास्कर, नागपुर (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

ललितपुर जनपद में पुरा वैभव एवं सांस्कृतिक विरासत यत्र-तत्र विखरी पड़ी है। जगह-जगह खुदाई में मिल रही प्रतिमाएं, पुरा अवशेष हमारी विशाल सांस्कृतिक विरासत के प्रमाण हैं। विगत दिनों प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़, अतिशय क्षेत्र गिरार आदि में मूर्तियां व अवशेष मिले थे। देवगढ़, सिरोन जी, बानपुर, मदनपुर आदि में भी हमारी ऐतिहासिक विरासत के दर्शन होते हैं। उसी क्रम में कारीटोरन के पास प्राचीन प्रतिमा मिली है। इस पर अनुसंधान की आवश्यकता है।



मडावरा विकासखंड में स्थित श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के पास स्थित ग्राम अगौड़ी में 21 नवम्बर को शाम लगभग 4 बजे सीसी रोड की खुदाई करते समय अत्यंत प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई थी, प्रतिमा प्राप्त होते ही गाँव वालों ने फोन पर कारीटोरन जैन समाज को सूचना दी, और फिर प्रतिमा जी पर भाव पूर्वक जल एवं पुष्प अर्पित किए।

श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के निकटवर्ती ग्राम अगौड़ी से प्राप्त प्राचीन जिन बिम्ब प्रतिष्ठाचार्य पण्डित महेश कुमार शास्त्री डीमापुर, पण्डित राकेश जी बैसा, पण्डित ऋषभ जी बड़ागांव के निर्देशन एवं आचार्यत्व में समस्त अगौड़ी ग्रामवासियों की सहमति से विधि विधान पूर्वक श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के श्री देवाधिदेव मुनिसुव्रत नाथ जिनालय की वेदी में मंत्रोच्चार पूर्वक स्थापित किए गए।

क्षेत्र कमेटी के प्रचारमंत्री डॉ. सुनील संचय ने बताया कि श्रीजी की भव्य आगवानी गाजे-बाजे के साथ ग्राम कारीटोरन में की गई।

जानकारों द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार ग्राम अगौड़ी से अभी और भी प्राचीन जिन बिम्ब प्राप्त होने की सम्भावना है। समस्त कार्यक्रम में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन समिति के महामंत्री डॉ

## श्रावक रत्न अलंकरण” से तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया को किया सम्मानित श्री शिखरचंद पहाड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता की सम्मान यात्रा निकाली गई

श्रवणबेलगोला शहर के चामुंडराय सभा मंडप में गुरुवार को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़ियाजी का विशेष सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्रवणबेलगोला श्रीक्षेत्र के प्रमुख चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी व अन्य अतिथियों ने विशेष योगदान व सहयोग के लिए श्री शिखरचंद पहाड़िया को “श्रावक रत्न अलंकरण” से सम्मानित किया। इस अवसर पर चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा दिए गये योगदान की सराहना करते हुए बताया कि कोरोना काल के दौरान इस समिति द्वारा कर्नाटक के लिए एक करोड़ रुपये का अनुदान घोषित कर एक विशेष कीर्तिमान रचा था। उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी के इतिहास की जानकारी देते हुए कहा कि यह समिति हमेशा से समाजसेवा व तीर्थकल्याण के लिए कार्य करती आ रही है। उन्होंने बताया कि इस तीर्थ समिति के पूर्व अध्यक्ष रहे श्री हुकुमचंद सेठ को मैसूर महाराजा ने अपने राजमहल में बुलाकर उनका अभिनन्दन किया था तथा श्री हुकुमचंदसेठ ने कमेटी द्वारा कर्मचारियों के वेतन के लिए 50 लाख रुपये का अनुदान व कर्नाटक सहित विभिन्न राज्यों में स्थित दिगम्बर मठों को सहयोग देने की अभूतपूर्व घोषणा की थी जो कि उस जमाने की बहुत बड़ी रकम थी। चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि आज भी तीर्थक्षेत्र कमेटी के समाजसेवी कार्य गतिमान हैं जो कि एक परम्परा बन चुकी है। स्वामीजी ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यों को सराहा।

सुनहरा इसिहास है भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का – भट्टारक श्री चारुकीर्ति महास्वामीजी - चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी



ने कहा कि आज के परिवेश में समाज व परिवार में तनाव का माहौल है जिसके परिणामस्वरूप हर व्यक्ति परेशान है। स्वामीजी ने कहा कि तनाव का त्याग कर हमें शांति के मार्ग को अपनाना चाहिए तभी हम घर परिवार व समाज में शांति की स्थापना कर सकते हैं। धार्मिक विरासत की सुरक्षा को सभी को एक होना चाहिए और अपने बुजुर्गों की समाजसेवा की परम्परा को आगे बढ़ाना चाहिए। शिखरचंद पहाड़िया के सम्मान से पूर्व श्रीक्षेत्र की ओर से श्री शिखरचंद पहाड़िया व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता की सम्मान यात्रा निकाली गई जिसमें मैसूर बैंड सेट, मंगल वाद्य व समाज के श्रावक श्राविकाएं उपस्थित थे। विद्यानंद छात्रावास से शुरू हुई शोभायात्रा विभिन्न मांगों से होती हुई सम्मान समारोह स्थल पर पहुंची पर पहुंची और धर्मसभा व सम्मान समारोह में परिवर्तित हो गई।

इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया ने श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी व अन्य साधु-साध्वियों के प्रति आभार जताया और कहा कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश भर में प्राचीन व निर्वाण क्षेत्रों के विकासकार्य के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने कहा

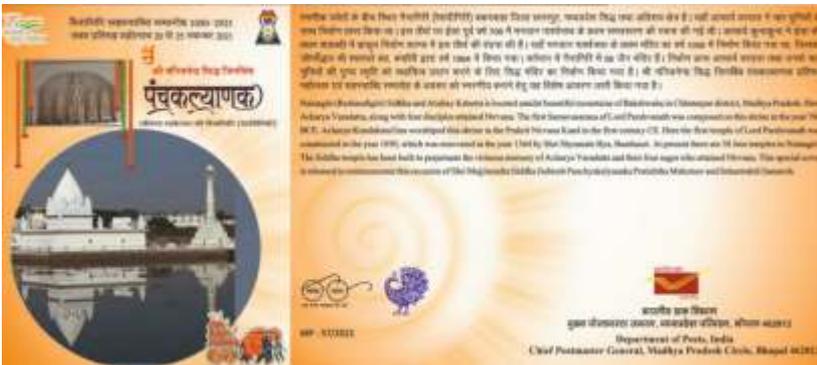


कि तीर्थक्षेत्र कमेटी विकास कार्यों का भार वहन करेगी तथा समाजसेवा व मानवसेवा के कार्यों को गति प्रदान करेगी तथा समाजसेवा व मानवसेवा के कार्यों को भी गति प्रदान करेगी। इस अवसर पर श्रवणबेलगोला श्रीक्षेत्र की ओर से श्री शिखरचंद पहाड़िया को 'श्रावक रत्न अलंकरण' द्वारा सम्मानित किया गया। चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने आचार्य गुलाबभूषणजी की पावन उपस्थिति में श्री शिखरचंद पहाड़िया को रजत कलश व अलंकरण पत्र भेंट किया। इस अवसर पर विभिन्न जैन संस्थानों द्वारा अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया एवं मंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी का सम्मान किया गया।

कुष्मांडिनी महिला समाज ने भी सम्मान किया। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों ने कृतज्ञता स्वरूप स्वामीजी को रजत दीप व फल आदि अर्पण किये। इस अवसर पर श्री संतोष जैन पेंढारी, श्री जयकुमार, केजेए अध्यक्ष बी. प्रसन्नैया, श्री विनोद बाकलीवाल, श्री विनोद वलियान्नावर, श्री निहालचंद जैन, श्री अशोक सेठी, श्री पद्मकुमार, एचपी श्री अशोककुमार व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।



## भारतीय डाक विभाग ने जारी किया नैनागिरि पंचकल्याणक पर विशेष आवरण



विश्व का सुविख्यात जैन तीर्थ नैनागिरि (रेशंदीगिरि) में दिनांक 20 से 25 नवंबर 2021 तक आयोजित श्री मज्जिनेंद्र सिद्ध जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं सहस्राब्दी समारोह को स्मरणीय बनाने हेतु दो पृष्ठ का हिन्दी एवं अंग्रेजी में भारतीय डाक विभाग द्वारा विशेष आवरण जारी किया है।

इस विशेष आवरण में उल्लेखित किया गया है कि "रमणीक पर्वतों के बीच स्थित नैनागिरि(रेशंदीगिरि) जिला छतरपुर, मध्य प्रदेश सिद्ध तथा अतिशय क्षेत्र है। यहां आचार्य वरदत्त ने चार मुनियों के साथ निर्वाण प्राप्त किया था। इस तीर्थ पर ईसा पूर्व वर्ष 706 में



भगवान पारसनाथ के प्रथम समवसरण की रचना की गई थी। आचार्य कुंदकुंद ने ईसा की प्रथम शताब्दी में प्राकृत निर्वाण काण्ड में इस तीर्थ की वंदना की है। यहां भगवान पारसनाथ के प्रथम मंदिर का वर्ष 1050 में निर्माण किया गया था, जिसका जीर्णोद्धार श्री श्यामले ब्या बम्हौरी द्वारा वर्ष 1564 में किया गया। वर्तमान में नैनागिरि में 58 जैन मंदिर हैं। निर्वाण प्राप्त आचार्य वरदत्त तथा उनके चार मुनियों की पुण्य स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के लिए सिद्ध मंदिर का निर्माण किया गया है। श्री मज्जिनेंद्र सिद्ध जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं सहस्राब्दी समारोह के अवसर को

स्मरणीय बनाने हेतु यह विशेष आवरण जारी किया गया है।"

इस विशेष आवरण जारी करने पर श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि की ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष सुरेश जैन आईएएस, प्रबंध समिति अध्यक्ष डा.पूर्णचंद जैन, महोत्सव समिति के अध्यक्ष देवेन्द्र लुहारी व महामंत्री राजेश जैन "रागी"(पत्रकार) तथा समिति के समस्त पदाधिकारी व सदस्यों एवं जैन समाज ने भारतीय डाक विभाग, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल का धन्यवाद आभार ज्ञापित किया है।

राजेश "रागी" बकस्वाहा

## सम्मेशिखरजी, गुणायतन व मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज के दर्शनार्थ पधारे केन्द्रीयमंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल



केन्द्रीय खाद्य, प्रसंस्करण मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल गुरुवार की शाम गिरिडीह के मधुबन पहुंचे, जहां उनके साथ बोकारो विधायक बिरंची श्री नारायण और जिलाध्यक्ष श्री महादेव दुबे भी उपस्थित रहे। केन्द्रीय मंत्री सबसे पहले मधुबन के गुणायतन भवन पहुंचे और विराजमान मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी महाराज संसघ के समक्ष श्रीफल भेंट कर दर्शन एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

मंत्रीगणों ने मुनिश्री के साथ गुणायतन के बाहर बन रहे थीम पार्क का भ्रमण किया उसके बाद गुणायतन के जैन मंदिर के दर्शन किये। पश्चात कलाकृतियों के एक स्टाल का उद्घाटन किया।

मुनिश्री से मंत्री महोदय प्रहलाद पटेल ने करीब एक घंटे तक बात की। मुनिश्री ने भी मधुबन आने को लेकर केन्द्रीय मंत्री का स्वागत किया। इस दौरान केन्द्रीय



मंत्री के साथ गुणायतन ट्रस्ट के टस्ट्री श्री अशोक जैन पांडूया, श्री सुनील अजमेरा और दिगंबर जैन न्यास ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ताराचंद गोधा समेत जैन समाज के कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

**सदाचारी के हाथों में होनी चाहिए सत्ता** – मुनिश्री 108 प्रमाणसागर जी महाराज ने कहा कि जब भी गुणायतन संस्था में बने मंदिर की प्रतिष्ठा होगी, तो प्रहलाद सिंह पटेल की अग्रणी भूमिका रहेगी। उन्होंने कहा कि संस्कारगत भटकाव में सुधार हो सकता है, लेकिन संगतिगत भटकाव में सुधार नहीं हो पाता है। देश की सत्ता की कमान सदाचारी के हाथों में होनी चाहिए। केन्द्रीय गृहमंत्री ने शंकासमाधान में उपस्थित होकर महाराज श्री के प्रति अपने व्यक्त व्यक्त किये एवं शंका समाधान कार्यक्रम के माध्यम से अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया।



## संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के 50वें आचार्य पदारोहण दिवस पर डाक विभाग द्वारा देशभर में लगभग 80 विशेष आवरण जारी



सहायक डाक निदेशक भोपाल श्री चंद्रेश जैन भोपाल एवं डॉ. सुनील "संचय" ललितपुर ने बताया कि आचार्यश्री के 50वें आचार्य पदारोहण दिवस 22 नवम्बर पर पूरे देश में अलग-अलग लगभग 80 विशेष आवरण जारी किए गए हैं जो कि एक रिकॉर्ड है। मध्यप्रदेश डाक परिमंडल में भी 12 संभागों में 12 विशेष आवरण जारी किए गए हैं, यह आवरण भोपाल, सागर, मंडला, सिवनी, कटनी, सतना, मंदसौर, इंदौर, होशंगाबाद, टीकमगढ़, विदिशा, अशोकनगर जिलों में जारी किए गए, इस हेतु डाक विभाग द्वारा विशेष तैयारियां की गई थी। 50वें आचार्य पदारोहण के अवसर पर संस्कृति, शासनाचार्य-स्वर्ण महोत्सव 2021-2022 के अन्तर्गत विशेष डाक आवरण जारी हुए हैं।



परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के 50 वें आचार्य पदारोहण दिवस पर पूरे देश में लगभग 80 विशेष आवरण जारी किए गए हैं।

### इन्दौर में जारी हुआ स्पेशल कवर



जैन जगत के संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आचार्य

पदारोहण के 50 वर्ष पूर्ण होने पर भारतीय डाक विभाग के माध्यम से विशेष आवरण स्पेशल कवर 22 नवंबर को जीपीओ इन्दौर द्वारा जारी किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी श्री हसमुख जैन गांधी ने कहा कि

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज वर्तमान समय के श्रेष्ठ साधक है, जिन्होंने स्व व पर उपकार के लिए हमें मार्गदर्शन देते हुए देश में नित-नूतन शंखनाद किये है, उनका व्यक्तित्व व कृतित्व भारतीय संस्कृति में अभूतपूर्व है, उनका 50वां आचार्य पदारोहण वर्ष संपूर्ण विश्व में संस्कृति शासनाचार्य महोत्सव के रूप में 22 नवम्बर 2022 तक विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक बेलगाम जिले के सदलगा में जन्में विद्याधर आज आचार्य विद्यासागरजी महाराज के रूप में विश्वव्यापी है। वहीं जिनकी प्रेरणा से सैकड़ों शिष्य दिगम्बर दीक्षा लेकर धर्म मार्ग पर चल रहे है। मांस निर्यात बंद करो, इंडिया नहीं भारत कहो, हिन्दी में सारे कार्य हो, हथकरघा के वस्त्र पहने, गौशालाओं का संवर्धन, नई शिक्षा नीति के सुझाव आदि महत्वपूर्ण कार्य आपके प्रवचनों से उद्बोधित हुए है।





## बारां में सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की छतरी का हुआ लोकार्पण श्रद्धा पूर्वक मनाया प्रथम समाधि दिवस

आचार्य ज्ञानसागर जी एक अद्वितीय सन्त थे: प्रमोद जैन भाया, खान एवं गोपालन मन्त्री राजस्थान



परम पूज्य सराकोद्धारक राष्ट्रसन्त आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की नसियाँजी बारां राजस्थान में दिनांक 15 नवम्बर 2020 को समाधि हो गयी थी। पूज्य आचार्यश्री की स्मृति में उनका प्रथम समाधि दिवस नसियां परिसर मे जैन समाज बारां द्वारा अगाध श्रद्धा के साथ मनाया गया। टीकमगढ़ से पधारे हुये प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशान्त जी के निर्देशन में ब्र.मनीष भैया जी, डॉ. धर्मेन्द्र जी दिल्ली, डॉ. अनिल जी जयपुर एवं ब्रह्मचारिणी दीदियों की गरिमामयी उपस्थिति में समाधि दिवस की सभी क्रियाएं विधि-विधान से सम्पन्न हुई।

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः जिनआज्ञा, आचार्य आमन्त्रण तथा ध्वजारोहण के साथ हुई। ध्वजारोहण स्थानीय जैन समाज के अध्यक्ष श्री अशोक सेठी व प्रबन्धकारिणी सदस्यों द्वारा किया गया। नसियाँ मन्दिर से घट यात्रा निकाली गई जिसमें महिलाएं सिर पर मंगल कलश धारण किये हुये थीं। मंगलकलशों में लाये गये अभिमन्त्रित जल से मंत्रोच्चार के साथ नव निर्मित सफेद संगमरमर की भव्य चरण छतरी की शुद्धि की गई। मुख्य पांडाल में आचार्यश्री का चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर उनकी संगीतमय पूजन की गई। पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज की स्मृति में निर्मित छतरी का लोकार्पण श्री सरोज कुमार, श्री विनोद कुमार, श्री विकास कुमार बड़जात्या परिवार द्वारा एवं छतरी में स्थापित गुरुवर के चरणों का प्रथम अभिषेक श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री नीलेश कुमार बज परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर विनयाजलि सभा आयोजित की गई जिसमें समाज के सैकड़ों

महिलाओं और पुरुषों के अतिरिक्त बाहर से पधारे हुये कई विद्वज्जन, तथा अतिथिगण सम्मिलित रहे। आयोजन के मुख्य अतिथि श्री प्रमोद जैन 'भाया' खान एवं गोपालन मन्त्री राजस्थान सरकार एवं अध्यक्षता श्री पानाचन्द मेघवाल विधायक बारां अटरू द्वारा तथा विशिष्ट अतिथि नगर परिषद के पूर्व सभापति श्री कैलाश पारस रहे। बाहर से पधारे हुये विद्वज्जनों एवं स्थानीय वक्ताओं ने गुरुचरणों मे विनयाजलि प्रस्तुत करते हुये गुरु का गुणानुवाद किया। राजस्थान सरकार में मंत्री श्री प्रमोद जैन 'भाया' ने अपनी विनयाजलि प्रस्तुत करते हुये कहा कि आचार्य ज्ञानसागर जी एक अद्वितीय सन्त थे। बारां में उनकी समाधि होने से यह क्षेत्र एक तीर्थ बन गया है। अब समाज का उत्तरदायित्व है कि वह इस क्षेत्र को एक भव्य व सुव्यस्थित रूप प्रदान कर सम्पूर्ण भारत में इसे लोकप्रिय करे। उन्होने कहा कि समाज की सेवा एवं सहयोग में वे सादर समर्पित हैं और हमेशा रहेंगे।

**ज्ञानसागर कॉम्पलेक्स का हुआ भूमिपूजन** - पूज्य आचार्यश्री की स्मृति में नसियाँ परिसर में समाज द्वारा श्री ज्ञानसागर कॉम्पलेक्स का निर्माण करने का निर्णय लिया गया, जिसका भूमि पूजन कर आधारशिला श्री प्रमोद जैन भाया, श्री पानाचन्द मेघवाल, श्री कैलाश पारस एवं समाज अध्यक्ष श्री अशोक सेठी द्वारा स्थापित की गई। कार्यक्रम का संचालन श्री यशभानु जैन द्वारा किया गया। सायंकालीन बेला में जबलपुर से पधारी हुई संगीतकार श्रीमती प्रीति जैन द्वारा 'एक शाम गुरुवर के नाम' कार्यक्रम में जैन आरती व भजनों की शानदार प्रस्तुति दी गई। बारां समाज के मन्त्री श्री वीरेन्द्र बड़जात्या व सांस्कृतिक सचिव महावीर बड़जात्या ने आभार व्यक्त किया।





## देश के इतिहास में स्वर्णिम दिवस “राष्ट्रपति भवन में सर्वोच्च जैन साध्वी का मंगल उद्बोधन”



भारत गणतंत्र के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ जी कोविंद के व्यक्तिगत आमंत्रण पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी भारतगौरव गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आगमन बड़े आत्मीय एवं विशिष्ट आदर सम्मान के साथ दिनांक 14 नवम्बर 2021 को प्रातः 9.30 बजे राष्ट्रपति भवन में हुआ। सर्वप्रथम संघ सहित पधारी पूज्य माताजी का साउथ कोर्ट के प्रवेश द्वार पर राष्ट्रपति जी के सचिव महोदय ने अभिवादन किया। पुनः गाइड के माध्यम से 350 एकड़ में विकसित राष्ट्रपति भवन के विभिन्न विशेष स्थानों पर समस्त संघ को भ्रमण कराया गया, जिसमें अशोका हॉल, दरबार हॉल, मुगल गार्डन आदि स्थान शामिल रहे।

राष्ट्रपति महोदय ने उत्साह के साथ अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सविता कोविंद और पुत्री के साथ पूज्य माताजी को प्रणाम किया और अपने बैठक कक्ष में आमंत्रित कर लगभग 25 मिनट पूज्य माताजी एवं उनके साथ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी से व्यक्तिगत चर्चा, वार्ता की। पूज्य माताजी के बैठने की व्यवस्था ससम्मान काष्ठ के तख्त व सिंहासन पर की गयी।

पश्चात् राष्ट्रपति भवन के YDR हॉल में एक सामूहिक उद्बोधन सभा का आयोजन हुआ। सभा के शुभारम्भ में जंबूद्वीप संस्थान की ओर से श्री सुरेश जैन कुलाधिपति, मुरादाबाद, श्री प्रमोद जैन वर्धमान ग्रुप, मॉडल टाउन दिल्ली, श्री अतुल जैन-जैन सभा, नई दिल्ली, पं. विजय जैन एवं डॉ. जीवन प्रकाश जैन-जंबूद्वीप द्वारा उन्हें गुलदस्ता व प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया।

पुनः राष्ट्रपति जी ने पूज्य माताजी के साथ पधारे सभी ब्रह्मचारिणी बहनों व अतिथियों से परिचय प्राप्त किया। उद्बोधन सभा में सर्वप्रथम पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने मंगलाचरण पूर्वक राष्ट्रपतिजी व भवन के सभी ऑफिसर के लिए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पुनः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अनेक जनकल्याण व समाज उद्धार की बातों व अहिंसा धर्म पर बल देते हुए देश के लिए अपना सारगर्भित उद्बोधन देकर राष्ट्रपति व उनकी धर्मपत्नी प्रथम महिला और पुत्री के प्रति असीम प्रेम

के साथ अपना मंगल आशीर्वाद भी प्रदान किया। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने राष्ट्रपति जी को जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में अयोध्या का महत्व भी विस्तार के साथ बताया और वर्ष-2022 को शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ विकास वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की।

अंत में राष्ट्रपति जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का राष्ट्रपति भवन में आगमन होना हमारे लिए सौभाग्य का विषय है। उन्होंने अपने उद्बोधन में पूज्य दोनों माताजी के लिए विशेष श्रद्धा अभिव्यक्त की और रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी को सम्बोधित करते हुए माँगीतुंगी-कार्यक्रम का भी उल्लेख किया। राष्ट्रपति जी ने अपने उद्बोधन में पूज्य माताजी की 88वीं जन्मजयंती पर शरदपूर्णिमा महोत्सव को सारे देश द्वारा मनाए जाने का भी उल्लेख किया और पूज्य माताजी की 70 वर्षीय साधना का भी उल्लेख कर उन्हें सादर प्रणाम किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति जी ने पधारे सभी त्यागीव्रतियों के त्याग की भी सराहना की। उन्होंने अपने उद्बोधन में अहिंसा की महत्ता पर भी विचार व्यक्त किए। कक्ष वार्ता में गौरव के साथ राष्ट्रपति जी ने 12 वर्ष बाद पूज्य माताजी की शताब्दी जन्मजयंती मनाने की भी उज्ज्वल भावनाएँ व्यक्त की।

अंत में पुनः सभी के अभिवादनपूर्वक सभा का समापन हुआ। ये महान क्षण निश्चित ही देश और जैन समाज के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ पर लिखे जाने योग्य बनें हैं, इस बात का सभी को गौरव है।

समारोह के साक्षी बनने का सौभाग्य पूज्य माताजी के संघस्थ सभी आर्यिकाओं, क्षुल्लक एवं ब्रह्मचारिणी बहनों के साथ, ब्र. अध्यात्म जैन लखनऊ, प्रतिष्ठाचार्य विजय जैन, डॉ. जीवन प्रकाश जैन जंबूद्वीप, संघपति श्रीमती अनामिका जैन, प्रीतविहार दिल्ली, श्री सुरेश जैन कुलाधिपति मुरादाबाद, श्री प्रमोद जैन मॉडल टाउन दिल्ली, श्री अतुल जैन-जैन सभा नईदिल्ली, श्रीमती मालती जैन बसंतकुंज दिल्ली, श्रीमती सुनंदा जैन, राजाबाजार दिल्ली व श्री संजय कुमार जैन, दिल्ली को प्राप्त हुआ।



## रानी बाग में अभूतपूर्व प्रभावना के साथ संपन्न हुआ चातुर्मास गुरुभक्त समीर जैन परिवार को मिली पिच्छी व मुख्य कलश



प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) परंपरा के प्रमुख संत परमपूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज का 16वां मंगल चातुर्मास 2021 राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी रोहिणी-पीतमपुरा क्षेत्र के प्रथम जिनालय श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, रानी बाग में व्यापक धर्मप्रभावना के साथ सानंद संपन्न हुआ। चातुर्मास कलश निष्ठापन एवं पिच्छी परिवर्तन समारोह का भव्य आयोजन दिनांक 21 नवम्बर 2021 को किया गया जिसमें पं. श्री अरविन्द जैन शास्त्री (रोहिणी) के निर्देशन में समस्त मांगलिक क्रियाएं विधि-विधान पूर्वक संपन्न हुईं। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री ज्ञानचंद जैन (अध्यक्ष) द्वारा ध्वजारोहण से हुआ जिसके पश्चात् मंगलाचरण हुआ। श्रीमती महिन्द्रा जैन सपरिवार (राजा पार्क) द्वारा चित्र अनावरण तथा श्रीमती मंजू जैन (सरस्वती विहार) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। सौभाग्यशाली परिवारों द्वारा जिनवाणी विराजमान, आचार्य श्री के कर-कमलों में शास्त्र भेंट तथा आचार्य श्री का पाद-प्रक्षालन किया गया। कार्यकारिणी समिति द्वारा विभिन्न समाजों से पधारे हुए गणमान्य महानुभावों का अभिनन्दन किया गया तथा चातुर्मास को सफल बनाने में तन-मन-धन से सहयोग करने वाले समाज के विशिष्ट महानुभावों का सम्मान किया गया।

पूज्य आचार्य श्री ने समस्त समाज को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि कोरोना काल में एक छोटी-सी समाज ने पहली बार किसी साधु का चातुर्मास करवाने का मन बनाया और फिर उसे सफलता पूर्वक संपन्न करवाकर एक नया इतिहास बना दिया है। समाज के हर वर्ग के व्यक्ति ने साधु की चर्या को निर्विघ्न सम्पूर्ण करवाने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया। आचार्य श्री ने आगे कहा कि रानी बाग जैन समाज अब भविष्य में भी इसी प्रकार साधुओं के आहार-विहार-निहार आदि की सुचारु

व्यवस्था करने में तत्परता के साथ सम्मिलित रहे और नगर में साधुओं के निरंतर आगमन को सुनिश्चित करे। चातुर्मास काल में अपने द्वारा हुई किसी भी प्रकार की भूलों के लिए समस्त रानी बाग जैन समाज ने पूज्य आचार्य श्री से क्षमायाचना की तथा इतनी छोटी समाज को चातुर्मास प्रदान कर कृतार्थ करने हेतु आभार प्रगट किया। कार्यक्रम के मध्य समाज के बच्चों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए जिसे उपस्थित जनसमुदाय ने करतल ध्वनि से खूब सराहा।

इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री का पिच्छी परिवर्तन समारोह भी आयोजित किया गया। आचार्य श्री के कर-कमलों में नवीन मयूर पिच्छिका भेंट करने का परम सौभाग्य सकल रानी बाग जैन समाज को संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ। आचार्य श्री ने अपनी पुरानी पिच्छी श्रीमती भानु जैन (एम. पी. एन्क्लेव) सपरिवार को प्रदान कर धन्य किया। तत्पश्चात् मुख्य चातुर्मास मंगल कलश हेतु लक्की ड्रा निकाला गया जिसमें अद्भुत संयोग से एक स्तब्धकारी घटना घटी। समस्त सभागार जयकारों से गुंजायमान हो गया जब आचार्य पद प्रतिष्ठापन के पश्चात् प्रथम चातुर्मास का मुख्य कलश भी पिच्छी प्राप्तकर्ता परिवार में ही श्री वरुण जैन (एम. पी. एन्क्लेव) को प्राप्त हुआ। यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्य श्री की पिच्छी तथा मुख्य कलश परम गुरुभक्त श्री समीर जैन के परिवार को प्राप्त हुए। उपस्थित जनसमुदाय ने परिवार के महासौभाग्य की सराहना करते हुए खूब-खूब अनुमोदना की। कार्यक्रम के अंत में आचार्य श्री के कर-कमलों द्वारा चातुर्मास में विराजित अन्य मंगलकारी कलश भी सौभाग्यशाली परिवारों को प्रदान किये गए।



## त्रिदिवसीय आचार्य पदारोहण दिवस भव्यता के साथ सानंद सम्पन्न प्रथम बार शास्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी बीस पंथी कोठी मे रचे कई इतिहास



जैनत्व के मार्ग पर अपनी आत्म साधना मे लीन आचार्य श्री 108 संभव सागरजी गुरुदेव आजीवन अन्न व षटरस त्यागी, ऐसे महान संत के पाद प्रक्षालन और गुरुपूजा का सौभाग्य आचार्यश्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज, अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी गुरुदेव व मुनि श्री पुण्य सागर जी को ससंघ मिला।

साधना महोदधि उभयमासोपवासी अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी गुरुदेव कों आचार्य पदारोहण के मंगल शुभ दिवस पर आचार्य श्री संभव सागरजी महाराज जी से पिच्छिका प्राप्त करने का अवसर मिला।

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज की सिंहनिष्कीडित व्रत की पारणा आचार्य सम्भव सागर जी, आचार्य विशुद्ध सागर जी, आचार्य निरंजन सागर जी, उपाध्याय विप्रणत सागर जी, मुनि श्री पुण्य सागर जी सकल संघ के सानिध्य मे सम्पन्न हुई।

उभय मासोपवासी, साधना महोदधि, अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी गुरुदेव की पिच्छी स्थविराचार्य श्री सम्भव सागर जी

महाराज, चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने बैंगलोर कमीश्रर (आई. ए. एस.) श्री मनोज शैलजा पाटनी को पिच्छी प्रदान कर अपना आशीर्वाद दिया।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज की पिच्छी अंतर्मना गुरुदेव के अनन्य भक्त श्रावण श्रेष्ठी श्री मनोज चौधरी जी को मिली। त्रिदिवसीय आचार्य पदारोहण दिवस शास्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी में विद्यमान सभी आचार्य, उपाध्याय, मुनि, ऐलक, छुल्लक व आर्यिका, छुल्लिका - लगभग 80 पिच्छियों के सानिध्य मे मनाया गया।

त्रिदिवसीय आचार्य पदारोहण दिवस पर विभिन्न ऐतिहासिक आयोजन हुये सम्मेद शिखर विधान, बीस पंथी कोठी की सभी बेदियों पर एक साथ शांति धारा, पंचामृत अभिषेक, अंतर्मना गुरुदेव की महाआरती, पिच्छी परिवर्तन एवं साधु परमेष्ठीयो कों पिछि भेंट, कोठी के कर्मचारियों का अपनत्व उत्सव।

त्रिदिवसीय आचार्य पदारोहण दिवस एवं पिच्छी परिवर्तन समारोह सौम्य मूर्ति मुनि श्री पियूष सागरजी महाराज के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉक्टर श्री संजय जैन इंदौर ने किया।



## चाँदनपुर भी राह वर्द्धमान की तकता है, श्री महावीर जी को वर्द्धमान की आवश्यकता है

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में मूलनायक १००८ भगवान श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक वर्ष २०२२ के २४ नवंबर से ३० नवंबर तक परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि, आचार्य श्री १०८ वर्द्धमान सागर जी महाराज संघ के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न होगा।



वालोंने आचार्य श्री के कर कमलों से गुरु कलश को प्राप्त किया। चातुर्मास कलश कोलकाता मुम्बई के श्री प्रकाश सरला पाटनी ने प्राप्त किया। महोत्सव समिति के शिरोमणि संरक्षक श्री अशोक पाटनी ने आचार्य संघ से महोत्सव हेतु सान्निध्य प्रदान करने के लिए और वर्ष 2022 का चातुर्मास

श्री महावीर जी क्षेत्र पर करने का निवेदन करते हुए कहा कि हे आचार्य श्री! पूरा राजस्थान आपके लिए पलक पावड़े बिछा कर रखा है, अब आप राजस्थान श्री महावीरजी की ओर विहार करें। तत्पश्चात् उपस्थित समस्त सभासदों ने आचार्य संघ और महिमा सागर जी महाराज और सरस्वती माताजी संघ के चरणों में श्री फल भेंट कर निवेदन किया।

मंच संचालन करते हुए कोलकाता के राकेश जी सेठी ने बताया कि आचार्य श्री के गर्भ में आने के पूर्व उनकी माताने श्री महावीर जी के दर्शन कर मनौती मांगी थी और आचार्य श्री की दीक्षा भी श्री महावीर जी में ही हुई थी। उन्होंने अर्ज करते हुए कहा कि "चाँदनपुर भी राह वर्द्धमान की तकता है,"



राजस्थान स्थित दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी दिगम्बर जैन श्रद्धालुओं की आस्था का एक बड़ा केंद्र है। वर्ष १९९८ में श्री महावीर जी स्थित १००८ भगवान श्री महावीर स्वामी की मूलनायक प्रतिमा का अभिषेक आचार्य १०८ श्री विद्यानंद जी महाराज के मंगल सान्निध्य में आयोजित किया गया था। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी स्थित मूलनायक १००८ भगवान श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा का पुनः मस्तकाभिषेक २४ वर्ष बाद सन २०२२ में २४ नवंबर से ३० नवंबर तक आयोजित किया जाएगा। उक्त घोषणा कर्नाटक के कोथली में १४ नवंबर २०२१ को आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में आयोजित सभा में की गई।

कार्यक्रम सभा के पूर्व प्रातःकाल की बेला में कोथली में नव निर्मित "वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्द्धमान सागर भवन, हाल" का लोकार्पण किशनगढ़ के श्रेष्ठी श्री अशोक जी पाटनी (R K Marble) द्वारा किया गया।

मुख्य मंदिर में मूलनायक भगवान श्री आदिनाथ स्वामी की वेदी का जीर्णोद्धार जयपुर के श्रेष्ठी श्री पूनम चंद जी प्रभा देवी शाह के सहयोग से किया गया। सभा का मंगलाचरण संघस्थ ब्र. पूनम दीदी द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन मस्तकाभिषेक महोत्सव समिति के शिरोमणि संरक्षक श्री अशोक जी पाटनी, अध्यक्ष श्री सुधांशु कासलीवाल, कार्याध्यक्ष श्री विवेक काला, सह संयोजक श्री सुरेश जी सबलावत, महावीर जी कमेटी के ट्रस्टी श्री हेमंत सौगानी, बंगलोर के श्री अनिल जी सेठी, अहमदाबाद के श्री राजेन्द्र कटारिया, श्री संजय पापड़ीवाल आदि गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् समस्त पूर्वाचार्यों को अर्घ्य समर्पण जयपुर के श्री राजेश सेठी, बंगलोर के श्री अशोक सेठी एवं श्री निहाल ठोल्ल्या, श्री विनोद धाकड़ा, श्री सुनील, श्री समर कंथली, श्री पारस गंगवाल, श्री विनोद कुवैत, तथा इचलकरंजी के श्री धनराज बाकलीवाल, श्री छीतरमल पाटनी एवं गणमान्य जनों द्वारा किया गया। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु कलश की स्थापना करने वाले श्री राजेन्द्र सुमन छाबड़ा गुवाहाटी, श्री सरोज सरिता जी बगड़ा सेलम



राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत से भेंट करते तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी



## हमारे नये सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

### आजीवन सदस्य



श्री तरुण चन्द्र जैन (काला),  
मुंबई



श्री राजेश पदमचंद जैन,  
सूरत (गुज.)



श्री कमलकुमार चन्द्रलाल जैन  
मुंबई



श्री आशीष जगदीश जैन  
मुंबई



श्री उत्तम भुदरमल शाह  
मुंबई



नरेश रोड लाईस प्रा.लि. - जयपुर (राज.)  
प्रतिनिधि - श्री प्रवीण कुमार जैन,



श्री हेमचन्द्र कपूरचंद झांझरी  
इंदौर (म.प्र.)



श्रीमती मीना हेमचन्द्र झांझरी  
इंदौर (म.प्र.)



श्री कमल कुमार बाबुलालजी जैन  
इंदौर (म.प्र.)



श्री महेंद्रकुमार चुन्नीलालजी जैन  
इंदौर (म.प्र.)



श्रीमती मीना महेंद्रकुमार जैन,  
इंदौर (म.प्र.)



श्री संजय उत्तमचंदजी पाटोदी  
इंदौर (म.प्र.)



श्री सुनील प्रकाशचन्द्र गोधा,  
इंदौर (म.प्र.)



श्री इंद्रकुमार गुलाबचंद सेठी,  
इंदौर (म.प्र.)



श्रीमती वीणा इंद्रकुमार सेठी,  
इंदौर (म.प्र.)



श्री हेमंतकुमार हीरालालजी बडजात्या  
इंदौर (म.प्र.)



श्री मुकेश कुमार सनतकुमार गोधा,  
इंदौर (म.प्र.)



श्री अरुणकुमार चिरंजीलालजी पहाड़िया,  
इंदौर (म.प्र.)



श्री कैलाशचंद मूलचंद पाटनी,  
इंदौर (म.प्र.)



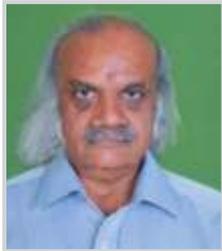
श्री कमलकुमार मदनलाल चांदवार,  
जयपुर (राज.)



श्री प्रभाचंद मदनलाल चांदवार,  
जयपुर (राज.)



श्री नरेश कुमार मदनलाल चांदवार,  
जयपुर (राज.)



श्री सुरेन्द्र कुमार गुलाबचंद जैन  
जयपुर (राज.)



श्री इंद्रकुमार फतेहलालजी जैन  
जयपुर (राज.)



श्री महेशकुमार फतेहलालजी जैन  
जयपुर (राज.)



आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

## अखिल भारतीय निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिभागी तीर्थक्षेत्रों के प्रति अपने विचार रख सकते हैं और उपहार भी जीत सकते हैं। यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की जा रही है। आज ही भाग लें-

अंतिम तिथि – २८ फरवरी २०२२

शब्द सीमा – २५०० शब्द

### वर्ग १ - उच्च शिक्षित वर्ग

विषय – मानसिक शांति के अनूठे केंद्र - जैन तीर्थ  
पात्रता – स्नातक व समकक्ष स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कोई  
दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

### वर्ग २ - पत्रकार वर्ग

विषय - पत्रकारों का जैन तीर्थों के प्रति दायित्व  
पात्रता - किसी मान्यता प्राप्त पत्रकार संगठन का सदस्य अथवा  
किसी रजिस्टर्ड पत्रिका में वर्ष २०१९ एवं २०२० या दोनों मिला  
करके न्यूनतम ३ लेख प्रकाशित कराने वाले दिगम्बर जैन पुरुष या  
महिला

प्रथम पुरस्कार

२१,०००/- रु.

द्वितीय पुरस्कार

११,०००/- रु.

तृतीय पुरस्कार

५,०००/-रु.

सांत्वना पुरस्कार

२,०००/- रु.

(दोनों वर्गों से तीन-तीन प्रतिभागी)

सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया जायेगा

### प्रतियोगिता के नियम -

- ❖ लेख A/४ आकर के कागज़ पर सुवाच्य हस्तलिपि या कम्प्यूटर कम्पोज किये होने चाहिए।
- ❖ लेख २ प्रतियों में भेजे जाने चाहिए।
- ❖ लेख के साथ उच्च शिक्षित वर्ग हेतु स्नातक या उससे अधिक की योग्यता का प्रमाण भेजें।
- ❖ लेख के प्रथम पृष्ठ पर प्रतिभागी का नाम, उम्र, पता, मोबाइल नंबर व ईमेल आईडी आदि का पूरा विवरण देवें।
- ❖ पत्रकार वर्ग हेतु किसी पत्रकार संगठन की सदस्यता का प्रमाण अथवा २०१९ या २०२० में प्रकाशित किसी पंजीकृत पत्रिका में प्रकाशित कोई तीन लेखों की छाया प्रतियों की प्रमाणित प्रति संलग्न करें।
- ❖ दोनों वर्गों में स्त्री एवं पुरुष दोनों भाग ले सकते हैं।
- ❖ समस्त प्राप्त लेख भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की संपत्ति होंगे।
- ❖ प्रतियोगिता में निर्धारित अंतिम दिनांक के बाद भेजे जाने वाले निबंध/लेख मान्य नहीं होंगे।
- ❖ लेख निम्न पते पर डाक/कोरियर से भिजवाएं। दूरभाष पर पुष्टि संभव नहीं है।

### डॉ. अनुपम जैन, प्रधान संपादक – जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुम्बई-४००००४. ईमेल: tirthvandana4@gmail.com

**विशेष:** प्रतिभागियों के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना निबंध भेजने के लिए दिनांक - २८ फरवरी २०२२ शाम ४ बजे तक का समय निर्धारित है।

RNI-MAHBIL/2010/33592  
Published on 1st of every month  
License to post without prepayment -  
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21  
Jain Tirth vandana, English-Hindi December 2021  
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office  
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,  
Posted on 16th and 17th of every month

*With Compliments*

From:



**GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.**

(Company of Siddho Mal-Inox Group)



GROUP OF COMPANIES

Corporate office :  
INOX Towers, 17, Sector 16-A,  
NOIDA - 201 301 (U.P.)  
Tel: 0120-614 9600  
Email : [contact@gfl.co.in](mailto:contact@gfl.co.in)



New Delhi Office :  
612-618, Narain Manzil, 6<sup>th</sup> Floor,  
Barakhamba Road,  
New Delhi - 110 001  
Tel: +91-11-23327860  
Email : [siddhomal@vsnl.net](mailto:siddhomal@vsnl.net)